।। वन्दे धेनुमातरम् ।।
यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्षः5

कामधेनु–कल्याण

अंकः9

माघ कृष्ण पक्ष वि.सं. 2067 फरवरी 2011

अनुक्रमणिका

1. **सम्पादकीय** 2

2. **साधक संजिवनी** ❖ श्रेष्ठ पुरुषों के आचरण सम्बन्धी विशेष बात 4

3. **श्रीकामधेनु कृपा प्रसाद** ❖परम भागवत गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज के प्रवचन 5

4. **गोभागवत कथा–2010** ❖ परम पूज्य द्वाराचार्य श्रीमंहत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज 10

5. देसी गोमाता का ए2 दूध व जर्सी का ए1 दूध का प्रभाव 15

6. **हिन्दु–संस्कृति** ❖ अन्तःकरण–चिकित्सा 18

7. **गो–विज्ञान** 22

8. **संस्था समाचार** ❖जनवरी, 2011 में गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानंदजी महाराज के प्रवास की संक्षिप्त रिपोर्टः–❖ चैन्नई ''श्रीधेनुमानस गोकथा'' सम्पन्न।❖जगद्गुरु द्वाराचार्य श्रीमंहत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज एवं संतों–साधकों का ''गोदुग्ध कल्प'' सम्पूर्णता की और। 27

9. **व्रतपर्वोत्सव** ❖ माघमास– माहात्म्य 29

10. **कविता** ❖ गोशाला 30

सुरभितुल्यमिहास्ति न भूतले सुखकरं धनमन्यदनाविलम्।
शमयतीयममंगलमर्चनैः, दहति पापकुलंच मुदार्पणैः।।

इस पृथ्वी पर गाय के समान और कोई सुखकर निर्मल धन नहीं है। इस गाय के पूजन से अमंगल नष्ट होते है तथा इसके दान से कई पापों का नाश होता है।

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज

Web. www.pathmedagodarshan.org
Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता
श्रीगोधाम महातीर्थ आनन्दवन–पथमेड़ा,
त.–सांचोर, जि.–जालोर (राज.) 343041
Ph.02979-287102-09
Tel. Fax. 02979-287122

प्रबन्ध व कार्यकारी सम्पादक
पूनम राजपुरोहित ''मानवताधर्मी''
Mob.9414154706

सम्पादक
स्वामी ज्ञानानन्द

आजीवन सदस्यता शुल्क–1100 रुपये मात्र

मूल्य–10 रुपये

गीता सार

श्रेष्ठ पुरुषों के आचरण सम्बन्धी विशेष बात

(सौजन्य से :- साधक संजीवनी)

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।।

भावार्थ :- श्रेष्ठ मनुष्य जो-जो आचरण करता है, दूसरे मनुष्य भी वैसा-वैसा ही आचरण करते हैं। वह जो कुछ प्रमाण कर देता है, दूसरे मनुष्य उसी के अनुसार आचरण करते हैं।।३/२१।।

प्रायः देखा जाता है कि जिस समाज, सम्प्रदाय, जाति, वर्ण, आश्रम आदिमें जो श्रेष्ठ मनुष्य कहलाते हैं और जिनको लोग श्रेष्ठ मानकर आदरकी दृष्टिसे देखते हैं, वे जैसा आचरण करते हैं, उस समाज, सम्प्रदाय, जाति आदिके लोग भी वैसा ही आचरण करने लग जाते हैं।

अंतःकरणमें धन और पदका महत्व एवं लोभ रहनेके कारण लोग अधिक धनवाले (लखपति, करोड़पति) तथा ऊँचे पदवाले (नेता, मंत्री आदि) पुरुषोंको श्रेष्ठ मान लेते हैं और उन्हें बहुत आदरकी दृष्टिसे देखते हैं। जिनके अंतःकरणमें जड़ वस्तुओं (धन, पद आदि) का महत्व है, वे मनुष्य वास्तवमें न तो स्वयं श्रेष्ठ होते हैं और न श्रेष्ठ व्यक्तिको समझ ही सकते हैं। जिसको वे श्रेष्ठ समझते हैं, वह भी वास्तवमें श्रेष्ठ नहीं होता। यदि उनके हृदयमें ध नका अधिक आदर है तो उनपर अधिक ध नवालोंका ही प्रभाव पड़ता है; जैसे- चोरपर चोरोंके सरदारका ही प्रभाव पड़ता है। वास्तवमें श्रेष्ठ न होनेपर भी लोगोंके द्वारा श्रेष्ठ मान लिये जानेके कारण उन धनी तथा उच्च पदाधिकारी पुरुषोंके आचरणोंका समाजमें स्वतः प्रचार हो जाता है। जैसे, धनके कारण जो श्रेष्ठ माने जाते हैं, वे पुरुष जिन-जिन उपायोंसे धन कमाते और जमा करते हैं, उन-उन उपायोंका लोगोंमें स्वतः प्रचार हो जाता है, चाहे वे उपाय कितने ही गुप्त क्यों न हो ! यही कारण है कि वर्तमानमें झूठ, कपट, बेईमानी, धोखा, चोरी आदि बुराइयोंका समाजमें, किसी पाठशालामें पढ़ाये बिना ही स्वतः प्रचार होता जा रहा है।

यह दुःख और आश्चर्यकी बात है कि वर्तमानमें लोग लखपतिको तो श्रेष्ठ मान लेते हैं, लेकिन प्रतिदिन भगवन्नामका लाख जप करनेवाले को श्रेष्ठ नहीं मानते। वे यह विचार ही नहीं करते कि लखपतिके मरनेपर एक कौड़ी भी साथ नहीं जायेगी, जबकि भगवन्नाम जप करनेवालेके मरनेपर पूरा-का-पूरा भगवन्नामरूप धन उसके साथ जायेगा, एक भी भगवन्नाम पीछे नहीं रहेगा।

अपने-अपने स्थान या क्षेत्रमें जो लोग श्रेष्ठ कहलाते हैं, उन अध्यापक, व्याख्यानदाता, आचार्य, गुरु, नेता, शासक, महन्त, कथावाचक, पुजारी आदि सभीको अपने आचरणोंमें विशेष सावधानी रखनेकी बड़ी भारी आवश्यकता है, जिससे दूसरोंपर उसका अच्छा प्रभाव पड़े। उनके किसी आचरणसे यदि समाजमें कोई बुराई फैलती है तो उसकी पूरी जिम्मेवारी उनकी है और उसके लिये वे पूरी तरह से दोषी हैं। इसी प्रकार परिवारके मुखियाको भी अपने आचरणोंमें पूरी सावधानी रखनेकी आवश्यकता है। कारण कि मुख्य व्यक्तिकी ओर सबकी दृष्टि रहती है। रेलगाड़ीके चालकके समान मुख्य व्यक्तिपर विशेष जिम्मेवारी रहती है। रेलगाड़ीमें बैठे अन्य व्यक्ति सोये भी रह सकते हैं, पर चालकको सदा जाग्रत रहना पड़ता है। उसकी थोड़ीसी भी असावधानीसे दुर्घटना होनेकी सम्भावना रहती है। इसलिये संसारमें अपने-अपने क्षेत्रमें श्रेष्ठ माने जानेवाले सभी पुरुषोंको अपने-अपने आचरणोंपर विशेष ध्यान रखनेकी बहुत आवश्यकता है।

(इसलिये वर्तमानके सभी श्रेष्ठ पुरुषोंको गोसेवा रूपी भगवत्कार्यमें लगकर औरोंके लिये उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिये, जैसा कि गोविन्दने स्यवं करके दिखाया)

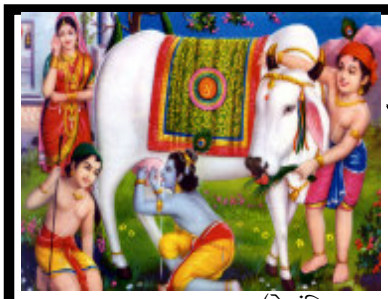

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(टेपांकित वाणी का संकलन)

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं कृष्णंवन्दे जगद्गुरूम्।।

कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्! कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्। जगदीश्वर भगवान की जय! सत्य सनातन धर्म की जय! गोमाता की जय!

सर्वेश्वर, सच्चिदानन्दघन, गोपालक, गोरक्षक, गोविन्द, आनन्दकंद, नन्द-नन्दन भगवान श्रीकृष्ण का हम नमस्कार पूर्वक स्मरण करते हैं और आज जन्माष्टमी के दूसरे दिन नन्दोत्सव में उपस्थिति पूज्य संतगण, साधक, पंडितजी, और आस-पास के गाँवों से पधारे हुए सभी ध र्मनिष्ठ, कर्तव्यपरायण, भगवद्चरणानुरागी, गोसेवा भावी सज्जनों, माताओं, बहिनों, बालकों आप सभी का सादर अभिवादन जय गोमाता ! जय गोपाल ।

नन्दोत्सव हो गया, हमने भी देखा। मटकी फोड़ी, दही फैला, अच्छा है उत्साह के लिए, उत्सव में उत्साह बढ़ाने के लिए कुछ ऐसे चीजें भी होती हैं जो आवश्यक नहीं। भगवान का प्रादुर्भाव ५ हजार वर्ष पहले पृथ्वी पर हुआ। भगवान के भक्तों को, धर्मात्माओं को उस दिन भगवान के अवतार के कारण जितना उत्साह और प्रसन्नता हुई थी उतना ही उत्साह और उतनी ही प्रसन्नता आज के दिन भी होती है। जितनी आवश्यकता भगवान के अवतार की उस समय थी उतनी आवश्यकता आज भी है तभी तो प्रतिवर्ष भगवान का जन्मोत्सव मनाते हैं। इसलिए मनाने हैं कि भगवान का प्राकट्य हो। वास्तव में भगवान तो सब जगह हैं, सब समय में, सब युगों में, सब कालों में वे तो रहते ही हैं, पर उनके जो स्वरूप का दर्शन है वो अवतार के बिना हो नहीं पाता। शास्त्रों ने अवतारों के कई कारण बताये, संतों ने भी बताये। इनके द्वारा जितने कारण बताये इतने तो कारण है ही है उनके अतिरिक्त भी अनेक कारण भगवान के अवतार लेने के हो सकते हैं। सारे-के-सारे कारण तो वे ही जानते हैं, पर मोटे-मोटे रूप में भगवान के अवतार के बारे में भगवान ने स्वयं ने जो बताया वो तो इतना ही बताया-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।
अभ्युत्थानम्धर्मस्यः तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

इतना सा कारण बताया, इससे अधिक नहीं। जब अधर्म बढ़ जाता है, धर्म दब जाता है, दुष्टों के पास सामर्थ्य आ जाता है, सज्जन कमजोर पड़ते हैं, वे नीति पर, धर्म पर चलने में अपने को असमर्थ पाते हैं, ऐसे समय में अवतार होता है। वे धर्म की स्थापना करते हैं, सज्जन पुरुषों का त्राण करते हैं और दुष्टों का भी कहने को तो दमन करते हैं, पर उनको भी परम पद दे देते हैं, जैसे भक्तों को देते हैं।

अन्धाधुन्ध सरकार है तुलसी भजो निशंक।
खीजे दीनों परम पद रीजे दीनी लंक।।

गुस्सा, खीज, क्रोध किया तो रावण को परम पद दे दिया और विभिषण पर प्रसन्न हुए तो लंका का राज दे दिया। अन्धाधुन्ध सरकार है। तो उनके हाथों से दुष्टों का जो संहार या दमन हम कहते हैं वो तो हमारी दृष्टि में है, वे तो उनका भी एक तरह से उद्धार ही करते हैं।

वास्तव में तो दुष्टों का उद्धार या दुष्टों को सनमार्ग पर लाना और अन्यान्य कार्य जो संसार के हमें दिख रहे हैं, जो गिनाये जाते हैं, वे कार्य तो भगवान बिना अवतार लिये भी कर सकते हैं चुटकी में। भगवान के अवतार लेने के जो बड़े ही गहरे कारण जो भक्तों ने, भगवत लीला में, नित्यलीलालीन रसिकों ने बताये हैं उनमें प्रधान कारण यह बताया कि बहुत से भगवत उपासकों के मन में ऐसा रहता है कि भगवान हम से बात करे, भगवान को हम भोजन करायें, वे हमारे साथ खेलें, वे हमारा बच्चा हों, वे हमारा भैया हों, वे हमारे पिता हों, इस तरह के कई भाव भक्तों में सृष्टि के आदि काल से ही रहते हैं। उन भावों को ही पूरा करने के लिये भगवान भक्तों के भावों के अनुरूप अवतरित होते हैं।

दूसरा, उनके अवतार काल की जो वो अनुग्रह और निग्रह की लीलाएँ हैं उनका श्रवण, मनन, पठन और गुणगान करने से दीर्घकाल तक मृत्यु लोक के प्राणियों को ज्ञान, भक्ति और प्रेम का प्रकाश मिलता है। वे अपने अवतार काल में कुछ ऐसे कालजयी सूत्र छोड़ जाते हैं जिनकी प्रासंगिकता हर युग में रहती है। भगवान आनन्दकन्द, नन्दनन्दन श्रीकृष्ण अपने अवतार काल में दो ऐसे महान सूत्र छोड़ गये हैं जो केवल युगों की ही बात नहीं बल्कि हर कल्प में भी आवश्यक रहेंगे। उनकी आवश्यकताएँ, उनकी प्रासंगिकताएँ इतनी ही बनी रहेगी जितनी कंस के अत्याचार के समय और दुर्योधन के दमन के समय बनी थी। महाभारत के रण क्षैत्र में और ब्रज में भगवान श्री कृष्ण के द्वारा छोड़े हुए सूत्र जितने जरूरी थे उतनी ही जरूरत हर समय में, हर युग में है।

पहला सूत्र जो उन्होंने मानव समाज के लिए, प्राणी जगद् के लिए छोड़ा वो है गोपालन लोक संस्कृति। गायों के गव्यों का दैनिक आहार में उपयोग अधिकाधिक मात्रा में हो, पैसे के लोभ से या अन्य किसी भय से गाय के गव्यों से अपने बालकों को वंचित नहीं रखना चाहिए। यह पहला सूत्र हमको भगवान ने दिया। दूध के बिना, गोमय के बिना, गाय के घी के बिना सात्विक आयु की कल्पना करना निरर्थक है। गाय के गव्यों से मनुष्य का सम्पूर्ण सात्विक विकास होता है। विकास तो दूसरे पदार्थ खाने से भी होता है, पर सात्विक विकास नहीं होता। हृदय विकसित हो, बुद्धि विवेकवान हो, शरीर स्वस्थ और सोमय हो, मन कोमल और सजग हो, ऐसा मानव केवल सात्विक आहार से ही तैयार हो सकता है और वो सात्विक आहार गोमाता ही दे सकती है। इस कारण गाय हम सभी पृथ्वी वासियों के लिए और अन्य लोकों के वासियों के लिए आराध्य है। क्योंकि गाय के गव्य और गाय की उपस्थिति, गाय की श्वास, गाय से स्पर्श होकर चलने वाला पवन यह सब मानव ही नहीं अपितु सम्पूर्ण प्राणी जगत जिसमें देव, पितृ, नाग, किन्नर, यक्ष आदि सारे ही सम्पूर्ण स्थूल और सुक्ष्म जगत के साथ जितना यह विराट ब्रह्माण्ड है इन सबके लिये उपयोगी है। गोमाता पूरे ब्रह्माण्ड को जीवनी शक्ति प्रत्यक्ष प्रदान करती है, ब्रह्माण्ड में आई हुई विकृतियों को मिटाती है, विषको मिटाती है, विष को अमृत के रूप में बदलती है।

इसलिये भगवान ने जहाँ उस समय सबसे अधिक गोपालन, गोधन जिनके पास था ऐसे परिवार में, ऐसे कुल में, ऐसे समूह में अवतार लेकर सबसे पहले हमारे भारत की प्रजा को और यहाँ के राजाओं को गोपालन लोकसंस्कृति का पाठ पढ़ाया। यह गोपालन

गोपालन लोक संस्कृति सबके लिये सर्वग्राही और सर्वाधिकार सुलभ है। वैदिक संस्कृति सबके सुलभ पहले भी नहीं थी और आज तो है ही नहीं पर गोपालन लोक संस्कृति का अनुशरण, अनुकरण सभी मनुष्य कर सकते हैं। इसलिये उन्होंने ऐसी सरल गोपालन लोक संस्कृति की स्थापना की जिसमें अधिक कोई नियमों की बाधाएँ नहीं है। वहाँ पर आप पहाड़ को भी पूज लो, जल को भी पूज लो। जरूरी नहीं कि इन्द्र के मंत्रों का आहवान करना। क्योंकि इन्द्र और अन्य जो देवताओं के स्वरूप हैं इन्हें तो भगवान के द्वारा ही नियुक्त किये हुए हैं, ये सारे तो भगवान के कर्मचारी है।

भगवान का जो मूल विधान है प्रकृति का या अनन्त का मंगलमय विधान, उस विध ाान में यह बात है कि सम्पूर्ण सृष्टि जो है यह एक तरफ है और गाय एक तरफ है। परमात्मा के लिए गाय अपने आपमें एक ब्रह्माण्ड है, अपने आपमें वो लोक है, अपने आप में धाम और तीर्थ है। गाय का सम्बन्ध पृथ्वी पर रहते हुए भी गोलोक से ही रहता है। निरन्तर वो गोलोक से जुड़ी हुई रहती है। इसी कारण गाय के निकट जाने वाले, गाय के सानिध्य में रहने वाले और गाय के गव्यों का सेवन करने वाले लोगों का भी सम्बन्ध सहज ही गोलोक से हो जाता है। वो लोक सभी सातों लोकों से ऊपर आया हुआ है।

सज्जनों ! यह पहला सूत्र उन्होंने अपने यहाँ पृथ्वी पर गोपालान लोक संस्कृति का छोड़ा, जिससे गाय के माध्यम से मानव जाति, अपना, संसार का और संसार को बनाये रखनेवाले, इन तीनों का काम कर सकती है। खुद का भी, जगत का भी और जगतपति का भी। गाय के आधार पर, गाय के गव्यों के माध यम से वो अगर अपने कर्मों का अनुष्ठान करे, चाहे वो उपार्जन के हों, चाहे उपयोग के हों, जितने भी कर्म हैं। हमारे तो प्रत्येक कर्म में, जन्म से लेकर मृत्यु तक और सुबह से लेकर शाम तक गाय ही गाय रहती है। हर जगह गाय थी, अब दूर कर दी गई, अब हमसे अलग हो गई वो अलग बात है। वापिस आ जायेगी। पर गाय सर्वत्र जन्म से मृत्यु तक जितने संस्कार हैं उनमें और सुबह से लेकर शाम तक गाय ही गाय थी। सुबह उठते ही धूप करो, दूध गर्म करो, बिलोवना करो, अग्निहोत्र करो, भोजन करो, भगवान को भोग लगाओ, फिर खेत में जाओ जहाँ भी जाओगे वहाँ गाय और गाय के गव्य आपको सब जगह सर्वत्र मिलेंगे। इस तरह गाय जब जीवन में समाहित हो जाती है, गाय का और हमारा जीवन जब एक हो जाता है तो जीवन में से, जो अशुद्धि है, जो मलिनता है, जो तम है, जो विकार है, जो रोग है वो समाप्त हो जाता है, वो समाप्त होकर जीवन शुद्ध, सात्विक, स्वस्थ, पवित्र, प्रसन्न और शांत बनता है। मनुष्य में क्षौर्य, धर्म, ओज आदि के दिव्य गुण आते हैं। गाय के कारण यह सब ऐसा हो सकता है। इसलिये उन्होंने एक हमें गोपालन का यह सूत्र दिया।

दूसरा सूत्र उन्होंने दिया हमें गीता का। जैसे स्थूल भूतों की और स्थूल शरीर की चिकित्सा करना आवश्यक है (इनमें विकृति आती है तो उनकी विकृति गाय के गव्यों से मिटती है) ऐसे ही सुक्ष्म जगत, यह जो सुक्ष्म शरीर है मन, बुद्धि, चित्, अहंकार आदि इनमें जो विकृति आती है उस विकृति को, उनकी बीमारी को मिटाने के लिए, उनके रोगों को मिटाने के लिए यह जो गीतारूपी

ज्ञान है उस रूप में हमें यह दूसरा सूत्र दिया।

मानव, यह जो मनुष्य है यह बुद्धि से, चित से कैसे बलवान, धैर्यवान, ज्ञानवान और सशक्त बने, उनका आत्मबल कैसे बढ़े, वो किसी भी परिस्थिति में अपने को निराश और हारा हुआ न माने, इसके लिए उन्होंने दूसरा सूत्र हमें गीता का दिया। गीता हमें हर परिस्थिति में प्रसन्न रहने की कला सिखाती है। हर एक परिस्थिति को साधन बनाने की कला गीता हमें सिखाती है। गीता हमें व्यवहार में परमार्थ का दर्शन करवाती है। गीता हमें भंयकर से भंयकर परिस्थिति को भी अपनी मुक्ति का साधन बनाने का तरीका बताती है। युद्ध जैसा भंयकर और कठोर कर्म भी अर्जुन के लिए मुक्ति का साधन बन गया, यह सब गीता से ही सम्भव है।

गीता के सम्बन्ध में आज तो हमें बड़े आश्चर्य की बात सुनने को मिली। अभी तक तो संत ही कहते थे कि गीताजी के अध्ययन, पठन, मनन और श्रवण से मानसिक रोग नहीं होते हैं, पर आज तो हमारे डॉक्टर साहब ने भी (खिरोड़ीके डॉक्टर साहब आये हैं, यहाँ विराजे हैं अभी) कहा कि गीताजी तो मन की चिकित्सा के लिए बड़ा ही अद्‌भुत आयुर्वेद ग्रन्थ है। मैंने कहा अच्छा तो गीता का अध्ययन और गोगव्यों का सेवन ये दो नियम तो आज भगवान के जन्म दिन के उपलक्ष में और नन्दोत्सव के उत्साह में हर एक को लेने चाहिए। जो पढ़े हुए नहीं हैं वो पढ़े हुए लोगों से गीता सुने। आजकल टेप आ गये हैं, टेप में केसिट आता है, केसिट में जो बोलता है वो भी अपने को सुनाई दे देता है। तो जो नहीं पढ़े हुए हैं वो अच्छे-अच्छे गीताका पाठ करने वाले, गीताका उपदेश करने वाले संत हैं उनके प्रवचनों की केसिटें लगा कर सुन लिया करें और जो पढ़े हुए हैं वे भाई, बहिन, स्त्री, पुरुष सभी गीताजी को जितना हो सके उतना ही सही लेकिन पढ़ें अवश्य। चाहे छोटे हों चाहे बड़े, गीताजी सबके काम की है। छोटे-से-छोटे और बुढ़े-से-बुढ़े के भी काम की है।

इसलिये सभी को प्रातःकाल स्नान करके सूर्य को जल चढ़ाने के बाद कम से कम एक अध्याय गीताजी का अवश्य करना चाहिए। गीता का अध्ययन करने वाले, गीता का पाठ करने वाले आदमी पर गीताजी की कृपा होती है। खुद गीताजी कृपा करती है, उनके मानसिक और आध्यात्मिक रोगों का हरण करती है। अगर वो कम पढ़ा लिखा हो और उसके भाव समझ में न आते हों तो गीता ही उनको धीरे-धीरे पढ़ना सिखा देती है और उसके समझ में आ जाती। बहुत से ऐसे लोग मिले जो अपना हस्ताक्षर करना नहीं जानते थे और वे गीता पढ़ते हैं। वे गीता पढ़ने का प्रयास करते-करते गीता की कृपा से ही गीता पढ़ना सीखे हैं। पहले तो ध... र... त.... ऐसे पढ़ते थे और बाद में 'धृतराष्ट्र' ऐसे पढ़ते हैं। यह गीता की कृपा से ही हो सकता है।

गीता और रामायण ये प्रसादिक ग्रंथ हैं। इनका पाठ करने वालों पर उनकी कृपा उतरती है। गीताके अध्ययन, पठन, मनन और श्रवण से कोई भारतीय वंचित न रहे इसलिये ही गीताप्रेस की स्थापना संतों के द्वारा, संतों के करुणित हृदय के द्वारा हुई थी। गीता के तीनों योगों, भक्ति योग, ज्ञानयोग और कर्मयोग पर अलग-अलग पुस्तकें, गीताजी की सरल और सुन्दर-सुन्दर कई तरह की पुस्तकें गीताप्रेस के द्वारा प्रकाशित की गई है। आप सभी लोगों के घरों में गीताजी होगी ही, नहीं हो तो यहाँ मिलती है लेकर जावें। एक आदमी ने गीताजी देने की बात कह रखी है

तो गीताजी ले जायें और गीताजी का पाठ करें। गीताजी का पाठ करने वाला व्यक्ति अधोगति में नहीं जाता।

स्वामी रामसुखदासजी महाराजजी से पहली बार जब मिलना हुआ तो उनके स्वभाव अनुसार उन्होंने हमसे कहा कि क्या गीता आपको याद है? हमने कहा महाराज गीता याद तो दो कारणों से की जाती है- या तो किसी को पढ़ानी हो या फिर उपदेश करना हो, पर हमको तो इन दोनों में से एक भी नहीं करना है। तो तुरन्त उन्होंने कहा कि मेरा तो स्वभाव बन गया है, प्रत्येक मिलने वाले को गीता का कहता हूँ और मेरा यह विश्वास है कि गीता का पाठ करने वाला, गीता का अध्ययन करने वाला कभी अधोगति में नहीं जा सकता। स्वामी रामसुखदासजी महाराज जैसे भगवद् प्राप्त महापुरुष अगर इतना विश्वास दिलाते हैं तो हम लोगों को और किसी के विश्वास की आवश्यकता नहीं है।

जिन्होंने गीता को जिया, पिया और वे स्वयं गीतारूप ही बन गये हो, ऐसे महात्मा अगर इतना कह देते हैं तो यह बहुत बड़ी बात है। ऐसे संतों का वचन यह प्रमाण है, वैसे तो गीताजी के लिये तो स्वयं गीता ही प्रमाण है, पर ऐसे संत महापुरुषों के प्रमाण समय-समय पर पिछले ५ हजार वर्षों से मिले हैं। गीतापर एक नहीं सैकड़ों ऐसे संत महापुरुषों ने अनेक भाषाओं में व्याख्याएँ लिखी हैं। जिन्होंने ये टीकाएँ लिखी हैं या उस पर मनन किया है उनको तो लाभ हुआ ही है, पर उनके द्वारा और कई लोगों को लाभ हुआ। अनेक इस तरह के भाव, हर एक व्यक्ति के कल्याण की बात, हर एक व्यक्ति के मन की पीड़ा को मिटाने की बात, हर एक व्यक्ति के अन्तर में शांति और आनन्दको बढ़ाने की बात गीतामें मिलेगी। गीतामें मनुष्य के कल्याण के भिन्न-भिन्न साधन बताये हैं। सब तरह के अधिकारियों के लिए गीता ने सब तरह के साधन बताये हैं।

गीताजी और गोमाताजी, ये दो सूत्र गोविन्द के दिये हुए हैं, गोपाल के दिये हुए हैं। हम अगर गोपाल के प्रति श्रद्धा रखते हैं, भगवान श्रीकृष्ण के प्रति श्रद्धा रखते हैं तो उनकी श्रद्धा का यही होगा कि भाई दो चीजें, एक तो गोपालन करें जो गोपालन घर में नहीं कर सकते नगरों में, शहरों में बाहर रहते हैं वो गाय के गव्यों का सेवन तो करें ही और जिनके यहाँ गाय रखी जा सकती है वो तो प्रत्यक्ष गायों का पूजन करें, उसकी अराधना करें। ऐसा कहा जाता है कि भगवान कृष्ण में भी गीताजी जैसा गीत गानेकी शक्ति गोमाता से ही आयी है। गोमाता कई अर्थों में गोविन्द से भी श्रेष्ठ है, पर गीता और गो इनसे बाहर कोई गोविन्द या गुरु नहीं है। गोविन्द चाहिए तो गाय ले लो और गुरु चाहिए तो गीता ले लो। गीता से श्रेष्ठ, सरल और अमोघ उपदेश इस ब्रह्माण्ड का कोई गुरु दे ही नहीं सकता। आज तक दिया भी नहीं और आगे भी देने की संभावना भी नहीं है। ऐसा गुरु का उपदेश गीता के रूप में और साक्षात स्वयं गोविन्द गाय के रूप में हम भारतवासियों को मिले हुए हैं। इससे और बड़ा हमारा क्या सौभाग्य हो सकता है।

अतः सभी गायके गव्योंका सेवन करने का, गोमाता का पूजन-पालन और गीता का श्रवण, पठन, अध्ययन करने का आज यहाँ से व्रत लेकर जायेंगे, इसी अपेक्षा के साथ नन्दजी के आनन्द उत्सव को इस कीर्तन के साथ विराम देते हैं- गोविन्द हरे, गोपाल हरे, जय जय प्रभु दीनदयाल हरे।

हरिः ऊँ तत् सत् श्रीमतेरामचन्द्राय नमः।

ऊँ नमः परमहंसास्वादित चरणकमल चिन्मकरन्दायः
भक्तज्ञनमानस निवासाय श्रीरामचन्द्राय।।
वागीशा यस्य वदनेलक्ष्मीर्यस्य च वक्षसि।
यस्यास्ते हृदये सम्वित् तं नृसिंह महं भजे।।
विश्वसर्वविसर्गादिनवलक्षणलक्षितम्।
श्रीकृष्णाख्यं परं धाम जगद् धामनमामि तत्।।
ऊँ नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एवं च।
नमो ब्रह्मासुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः।।
प्रह्लाद नारदपरासर पुण्डरीक व्यासाम्बरीष
शुकशौनक भीष्मदाल्भ्यान्।
रूक्माकंदार्जून वशिष्ठविभीषणादीन् पुण्यानिमान्परम
भागवातान्नमामि।
वांच्छाकल्पतरूभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एवं च।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्ण वेभ्यो नमो नमः।।
नारायणं नमस्कृत्य नरंचैव नरोत्तमम्।
देवी सरस्वती व्यासं ततो जय मुदीरयेत।।
भक्तभक्तिभगवन्त गुरूचतुर नाम वपु एक।
उनके पद वन्दन किये नाशैं विघ्न उन्नेक।।

गोविन्द जय जय गोपाल जय जय, श्री राधा रमण हरि गोविन्द जय जय ..... श्री राम जय जय, ऋषिकेश जय जय, सीता रमण राम रघुनाथ जय जय...

श्रीवृंदावन धाम की जय, कृष्ण कन्हैयालाल की जय, श्री गिरीराजधरण महाराज की जय, श्रीयमुना महारानीकी जय, श्रीगोमाताकी जय, अखिल गोवंशकी जय, श्रीपथमेड़ा गोधाम की जय, श्रीकामधेनु कल्याण महामहोत्सव की जय, श्रीमनोरमा देवीकी जय, श्रीसमृद्धि देवी की जय, श्रीमद्भागवत महापुराणकी जय, जय जय श्री राधे।

हरिशरणम्, अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक सर्वेश्वर, परब्रह्म, असंख्य दिव्यान्त कल्याण परमानन्दकन्द सिन्धु, भक्त वाच्छा कल्पतरू, भक्तवत्सल, शरणागतवत्सल भगवान श्रीहरिकी महत्ति कृपासे, करुणासे श्रीपथमेड़ा गोधाममें, इस पवित्र महातीर्थके इस दिव्य परिसरमें कामधेनु कल्याण मंडपम्में परम श्रद्धेय पूज्य श्रीमहाराजजी की पावन सानिध्यमें, परम श्रद्धेय पूज्य संत महापुरुषोंकी पावन उपस्थितिमें हम आप सब अखिल विश्वमें गोवंशका आदर हो, गोवंशकी रक्षा हो, गोसेवामें हम सबका अनुराग बढ़े और अनुदिन, अनुक्षण गोमाताके चरणोंमें हमारी प्रीति बढ़ती चली जायें। बस इन्हीं पवित्र संकल्पोंको लेकरके इस महोत्सवमें इस दिव्य एक सप्ताह पर्यन्त चलनेवाले सत्संग सत्रका शुभायोजन हो रहा है।

पहले भी दो बार वाणीसे सेवाका अवसर प्राप्त हो चुका है। सर्वप्रथम तो पूज्य गुरुदेव अनन्तश्री सम्पन्न सद्गुरुदेव श्रीगणेशदासजी भक्तमालीजी महाराजके पावन सानिध्यमें श्रीवंदावनसे आये हुए अनेक संतोंकी उपस्थितिमें यहाँ इस कामधेनु कल्याण महोत्सवमें उपस्थित होकर वाणीसे सेवा करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। पुनः हम समझते हैं कि दो वर्ष पूर्व ही इसी मंचसे श्रीमद्भागवतके माध्यमसे एक सप्ताह पर्यन्त सत्संग करनेका अवसर मिला, पुनः गोमाताकी कृपा-करुणासे,पूज्य श्रीमहाराजजी के शुभ संकल्प से पुनः यह अवसर प्राप्त हो रहा है। जो एक सप्ताह पर्यन्त श्रीमद्भागवत के माध्यमसे हम सब गोमाताकी चर्चा करके अपनी वाणीको पवित्र करेंगे।

हम क्या कहें! गोमाताके सम्बन्धमें,

हमारेमें विवेक नहीं है। सामर्थ्यका सर्वथा अभाव है, हम तो एक ही प्रार्थना करते हैं कि हमारे आराध्य, उपास्य भगवान श्रीकृष्णकी भी ईष्ट देवता, उपास्य देवता गोमाता सर्व समर्थ है; वे सर्वसमर्थ गोमाता इस शरीरको माध्यम बनाकर, इस वाणीको माध्यम बनाकर अपने स्वरूपका स्वयं ही प्रकाश करें। वे यंत्री बनकर इस शरीरका यंत्रकी तरह उपयोग करें, अलगसे न तो स्वाध्यायका अवसर मिलता है, न चिन्तनका अवसर मिलता है। बस बैठकर भगवत प्रेरणा से जो चर्चा कर लेते हैं बस वही है।

श्रीमद्भागवतमें मंगलाचरण करते हुए परम हंस चक्रचूड़ामणि श्रीसुकदेवजी महाराज ने कहा कि जिस परब्रह्म परमात्मा भगवान ने अपने संकल्पसे यह भूत सृष्टिकी, भूत स्वर्ग जिसको कहते हैं और इन पंचभूतोंसे इस पिण्ड ब्रह्माण्डकी रचनाकी और रचना करके **''निर्मायस्येत अमुसुपुरुषाः स्येते''** इन शरीरोंमें वे अन्तरव्यापी रूपसे विराजमान हैं और वे स्वयं ही अन्तरव्यापी रूपसे विराजमान होकर के घूमते हैं, वे अकर्ता होते हुए भी कर्ता भी है और अभोक्ता होते हुए भी भोक्ता भी है। ऐसे वे भगवान ही हमारी समस्त वाणियोंको अलंकृत करें।

श्रीभाष्यकार पतंजलीजीने महाभाष्यमें कहा है कि ''चत्वारी भाग'' चार प्रकारकी वाणियाँ हैं-परा, पश्यन्ति, मध्यमा और वैखरी। इन चारों प्रकारकी वाणियोंके मर्मको, रहस्य को, भेदको जो विद्वान मनीषि ब्राह्मण हैं, वे ही जानते हैं। विद्वान लोग कहते हैं, कि उनमेंसे ये तीन प्रकारकी वाणियाँ अन्तर निष्ठ प्रविष्ठ हैं, सभी प्राकृत मनुष्योंके अनुभवका विषय नहीं बन पाती; किन्तु चौथी वाणी वैखरी है **''तुरियम् वाचोः मनुष्या वदन्ति''** चौथी वाणीको मनुष्य कहते हैं। यहाँ सुकदेवजी का भगवानके चरणोंमें प्रेमाग्रह है कि भगवन केवल हमारी वैखरी वाणीको अंलकृत न करें, अपितु ''परा, पश्यन्ति, मध्यमाके सहित वैखरीको आप अलंकृत करें। हम भी परब्रह्म स्वरूपीणी गोमाताके चरणोंमें प्रणाम पूर्वक प्रार्थना करते हैं, गोमाता हमारी समस्त वाणियोंको अलंकृत करें। जिससे हम गोमाताके सम्बन्धमें कुछ कह सकें।

श्रीमद्रामचरितमानस में जनकजी महाराज, महारानी सुनेनाजीको कह रहे हैं- श्रीरामजीकी महिमा इतनी अगाध है, अनन्त है कि बड़े-बड़े ऋषि, महर्षि भी यथार्थ रूपमें यह निर्णय नहीं कर सकते कि हम उनकी महिमाको कह सकते हैं। फिर भी शास्त्रका आश्रय लेकर के, परम्परा का आश्रय लेकरके, नित्य सिद्ध अनादि तपोऋषि, नित्यसिद्ध अनादि तपोऋषि वेदका आश्रय लेकर के श्रीरामका निरूपण ऋषि, मुनि करते हैं। सर्वज्ञ सर्ववित श्रीरघुनाथजी के तत्वका निरूपण तो यत्किंचित संभव है किन्तु इन सर्वज्ञ, सर्वविद, सर्वसमर्थ श्रीरघुनाथजी से प्रार्थनाकी जाये कि हे प्रभु आप भरतजीकी महिमाके सम्बन्धमें कुछ कहें! तो **भरत महा महिमा सुनु रानी, जानही राम न सकही बखानी''** रामजी सर्वज्ञ, सर्वविद होने के कारण प्रेममूर्ति श्रीभरतजीकी महिमाको जानते तो हैं किन्तु उनसे कहा जाये कि आप इसको स्पष्ट करके इसका वर्णन करें तो रामजी उसका व्याख्यान करनेमें समर्थ नहीं हैं।

ठीक यही बात गोमाताके सम्बन्धमें है। गो तत्वको सम्पूर्ण तो विद्वान सर्वज्ञ भगवान ही जानते हैं, न जानते होते तो वे गोसेवक बनकर अवतरित ही क्यों होते! भागवान गोपालक बनकर गोविन्दके रूपमें गोसेवक बनकरके, गोउपासक बनकरके, गोरक्षक बनकर के भगवान

इस धराधाम पर प्रकट हुए। इससे सिद्ध होता है कि गोतत्व को, गोमहिमा को भगवान यथार्थ रूपमें जानते हैं, क्योंकि वे सर्वज्ञ, सर्वविद हैं। किन्तु उन भगवानसे प्रार्थना है कि जाये कि हे गोविन्द प्रभु ! आप अपनी आराध्य देवता, उपास्य देवता गोमाताकी महिमाका वर्णन करें; तो हमारा ऐसा विश्वास है कि गोविन्दका हृदय भी प्रेमसे भर आयेगा, उनके नैत्र सजल हो जायेंगे, वे पुनःपुनः गोचरण अपने मस्तक पर धारण करने लग जायेंगे और कहेंगे कि मैं गायकी महिमा जानता तो हूँ किन्तु उसका वर्णन करना नहीं जानता, उसका निरूपण करनेकी क्षमता हमारेमें भी नहीं है।

अभी परम श्रद्धेय पूज्य स्वामीजी की वाणीसे हम लोग श्रवण कर रहे थे। बहुत ही आनन्द मिल रहा था। हम तो स्वामीजी से आग्रह करते हैं कि आप श्रीमद्भगवद्गीता के श्रेष्ठ उपासक हैं, तो श्रीमद्भगवद् गीता के आधार पर हम गोविज्ञानको कैसे समझें, गोसेवामें हमारी निष्ठा, श्रद्धा कैसे बढ़े? आप यहाँ पधारे हैं तो इस सम्बन्ध में भी यह कार्य करें। क्योंकि आपने अपनी वाणीसे ही कहा है कि श्रीमद्भगवद् गीता वह कुंजी है अध्यात्म की जिससे ताला खुल जाता है, सारी गुत्थी सुलझ जाती है, पूर्ण तत्वविज्ञ हो जाता है, कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जिसका वर्णन, बोध श्रीमद्भगवद् गीताके माध्यम से न हो, वस्तुतः यह सत्य यथार्थ, सर्वमान्य सिद्धान्त है। ''एकम् शास्त्रम्'' देवकी पुत्र, गीतापर हमारी प्रार्थना है कि आप यहाँ गोधाम पथमेड़ामें पधारे हैं तो आप एक ऐसा ग्रन्थ प्रकाशित करावें, आपकी ओर से होना चाहिए, जिसमें श्रीमद्भागवद् गीताके माध्यम से हम गोविज्ञानको कैसे समझें, गोमाताकी सेवामें हमारी प्रवृति कैसे हो, इसका लाभ हम लोगोंको प्राप्त हो।

तत्वका अनुभव अपने-अपने सिद्धान्तके अनुसार, परम्पराके अनुसार, मान्यताके अनुसार, नित्य सिद्ध अनादि तपोऋषि वेदोंके और रामायण के अनुसार सभी करते हैं और जिसकी अनुभूति में जो आया वह ठीक है ''एकम् सद्विग्रह बहुदावदन्तिः'' पर सिद्धान्तकी बात यह है कि सिद्धान्तमें किसीका किसीमें किसीके साथ किसी भी प्रकारका मतभेद नहीं है कि सेवा करें। सेवा धर्म अत्यन्त गहन है, *सेवाधर्मः परमगहनः योगीनाम् अप्यगमः* – सेवा धर्म अत्यन्त गहन है, योगियों के लिए भी सेवाधर्म अगम है। हमारे पूज्य महाराजजी कहते थे कि योगीनाम् अपगम्य तात्पर्य है कि वे योगी जो पिण्ड ब्रह्माण्डके समस्त रहस्यों को जानते हैं उन योगियों के लिए भी सेवा धर्म अत्यन्त गहन है, सुक्ष्म है। वे पिण्ड ब्रह्माण्ड के भेद को समझ सकते हैं, पर सेवा के रहस्यों को वे समझ जायें, यह संभव नहीं है। क्योंकि सेवाका रहस्य तो केवल सेवक को ही प्राप्त होता है। वह किसी ग्रन्थके माध्यमसे, किसी क्रियाके माध्यम से, किसी उपासना विशेषके माध्यमसे नहीं, निष्काम सेवाके माध्यमसे ही सेवाके गौरव को, सेवाके महत्त्वको, सेवाके सुखको जाना जा सकता है।

हम गायकी सेवा न करें, गायपर केवल वक्तव्य दें, प्रवचन करें तो हमें क्या उसका अनुभव होगा, किन्तु हम भले ही अपनी वाणी से कुछ न कहें, केवल गायकी सेवामें लग जायें तो हमें सब कुछ प्राप्त हो जायेगा और उपनिषद्में इसका प्रमाण है। आप सब इस कथा को बारम्बार सुन चुके हैं और जानते हैं, महर्षि गौतमका शिष्य जबालाका पुत्र सत्यकाम अपने गुरुदेवकी आज्ञा पाकर, सौ गायोंको

लेकरके गोचारणके लिये निकला, गोसेवाके लिए निकला। गुरुदेवका आदेश था कि जब यह एक सहस्त्र पूर्ण हो जायें तो इनको लेकर के तुम पुनः आश्रममें आना। गुरु आज्ञा पर विचार नहीं किया जाता। इन सब वाक्यों को यथार्थ रूप में समझने वाला सत्यकाम श्रद्धावान सत्शिष्य सत्यकाम वह गोवंशको लेकरके चला और वह इतना तल्लिन हो गया, इतना तन्मय हो गया गोसेवा में कि गायोंकी संख्या बढ़कर कब एक सहस्त्र हो गई उसे पता ही नहीं चला। यदि वह गोसेवामें इतना तल्लिन, तन्मय न होता तो रोज गिनती करता कि कितनी बढ़ी, कितनी बढ़ी, एक हजार कैसे पूरी हो, जल्दी गुरुके आश्रममें पहुँचाकर कुछ पढ़ना लिखना शुरू किया जाये; पर वह सेवामें इतना तल्लिन, तन्मय हो गया कि उसने कभी गिनती नहीं गिनी, केवल सेवा करता रहा।

जब उनकी संख्या एक सहस्त्र पूर्ण हो गई तो उन गायोंका स्वामी गेवेन्द्र गोस्वामी वृषभ डहकता हुआ सत्यकामके निकट आया। श्रद्धापूर्वक उस धर्मरूप वृषभके चरणोंमें सत्यकाम ने प्रणिपाद किया,नमस्कार किया। उस वृषभ ने कहा- वत्स सत्यकाम! हमारी एक सहस्त्र संख्या पूर्ण हो चुकि है,अब हमें गुरु आश्रमकी ओर ले चलो। तुम्हारी गुरु सेवा सुश्रुषासे, तुम्हारी आज्ञा पालन रूप गुरुसुश्रुषासे हम अत्यन्त ही संतुष्ट हैं और तुम ब्रह्मविद्या के अधिकारी हो। हम तुम्हें ब्रह्म विद्याके प्रथम पाठका उपदेश देते हैं और उस वृषभ ने प्रथम पाठका उपदेश दिया। आगे द्वितीय पाठका उपदेश तुम्हें अग्निके द्वारा प्राप्त होगा फिर उससे आगेका उपदेश एक मंगु नामक पक्षीके द्वारा प्राप्त होगा और उसे क्रमश ब्रह्मविद्याका विज्ञान प्राप्त हुआ और अन्तमें जब उसने अपने गुरुके चरणोंमें प्रणाम किया तब केवल एक पाद अवशिष्ठ था ब्रह्मविद्या का। तो उस समय महर्षि गौतम कह रहे हैं कि वत्स तेरा मुख ब्रह्म वक्ता के जैसा दिखाई पड़ रहा है। तूँ ब्रह्मज्ञानी होकर यहाँ आया है, यह कैसे संभव हो गया। तुझे ब्रह्म विद्या कैसे प्राप्त हो गई? बोले आपकी कृपा से! आपने जो गोसेवा की आज्ञा दी और मैंने श्रद्धापूर्वक गायकी सेवाकी उससे मुझे यह प्राप्त हुआ किन्तु आपकी वाणीसे श्रवणके बिना वह विद्या पूर्ण नहीं होगी, ज्ञान पूर्ण नहीं होगा। अब आप मुझे अनुग्रहित करें, फिर चतुरपाद का उपदेश उनके गुरुदेव ने उनको प्रदान किया।

तात्पर्य है कि गोसेवासे तत्त्व विज्ञान संभव है। गोसेवा से भगवद् प्राप्ति सम्भव है पर सावधानी यह रखी जाये कि हम सेवाका स्वरूप समझें, सेवा करनेसे पहले हमें यह विचार करना होगा कि सेवा किसकी की जानी चाहिए। सेव्यके अभावमें सेवा सम्भव नहीं है। सेवाके लिए पहले सेव्यका होना अनिवार्य है। सेव्य उपस्थित हो तब तो सेवा होगी।

तब सेव्य क्या है? इस सम्बन्धमें हमें ठीकसे विचार करना चाहिए। सेव्य शब्दका अर्थ होता है जो सेवाके योग्य होता है। जिसकी सेवा सबके द्वारा की जाये उसको सेव्य कहते है। सेव्यकी विस्तार से चर्चा करते हुए हमारे शास्त्रोंने बताया है कि मातृ देवोभव, पितृ देवो भवः, आचार्य देवो भव, अतिथी देवो भव। सेव्यकी व्याख्या ही यह है। माताको भगवद् स्वरूप मानकर सेवा करो, पिताको भगवद् स्वरूप मानकर सेवा करो, गुरुको भगवद् स्वरूप मानकर सेवा करो, अतिथिको भगवद् स्वरूप मानकर के सेवा करो।

अग्निहोत्र के माध्यम से, यज्ञादि के माध्यम से, देवाराध्यों की आज्ञा भी हमारे शास्त्रों ने हमें प्रदान की है और यथा साध्य हम समय-समय पर देवताओं की आराधना, उपासना भी करते हैं। पंचदेवो उपासना तो सनातन धर्म में अत्यन्त प्रसिद्ध है ही। जिन माता, पिता, आचार्य और अतिथिका हम सतकार करते हैं, वे माता, पिता, आचार्य, अतिथि वे भी तो किसीकी सेवा करते ही हैं, सत्कार करते ही हैं। जैसे देवताओंका, ऋषियोंका आदि। इसका तात्पर्य है कि देवता, ऋषि आदि उनके सेव्य हैं। देवता और ऋषि ये भगवद् गीता की अनुभुति होने के कारण **देवानाम् असमीवास्वः** देवताओं में मैं इन्द्र हूँ, भगवान की विभूति होने के कारण देवता इन्द्र की उपासना करते हैं, प्रजापतियों की उपासना करते हैं, वे मनुओं की उपासना करते हैं और यह सब मिलकर प्रमेष्टि पद पर विराजमान लोक पितामह श्रीब्रह्माजी की सेवा करते हैं।

वैसे सदाशिव सदासर्वदा विद्यमान रहते हैं, किन्तु त्रिदेवों में सृष्टि के क्रम में भगवान रुद्र ब्रह्माजी के भूमध्य से प्रकट होते है, इसलिए ब्रह्माजी पिता हैं और रुद्र उनके पुत्र हैं। इस भाव से भगवान रुद्र भी प्रजापति ब्रह्मा की उपासना करते हैं किन्तु इन्द्रादि देवता देवादिदेव महादेव और स्वयं श्रीब्रह्माजी महाराज वे भी किसी की सेवा करना चाहते हैं। उनका आराध्य उपास्य सेव्य कौन है, इस बात पर जब हम विचार करते हैं तो श्रीमद्भागवत के ११वें स्कंद में नौ योगेश्वर संवाद में वह श्लोक हमारी स्मृति में आता है। जहाँ नौ योगेश्वर कहते हैं कि कलिकालमें जन्म लेने वाले साधकोंको भगवान की इस प्रकार स्तुति करना चाहिए- हे महापुरुष! हे परम पुरुष! हे पुरातनपुरुष! हे नाथ! हे भगवान! हम आपके चरणों में प्रणाम करते हैं। आपके चरणकमल सदा ध्यान करने के योग्य हैं। इस संस्कृति के दुःखद् चक्र से आप जीवों को छुड़ाने वाले हैं, अधिष्ठ की पूर्ति करने वाले हैं, अत्यन्त पवित्र हैं, पतितों को भी परम पावन बना देने वाले हैं और शंकरजी व ब्रह्माजी भी अपना आराध्य उपास्य और सेव्य मानकर उनका सेवन करते हैं इनका पूजन करते हैं। वे शरणमें जाने के योग्य हैं। यह आपके युगल चरणकमल शरणागत भक्तकी सम्पूर्ण आरतीको, कष्ट को दूर करने वाले हैं। शरणागतोंका पालन करने वाले हैं, भवसागरसे पार उतारनेके लिए तो ये आपके चरणारविन्द जहाज के समान हैं, ऐसे आपके चरणकमलों में हम सब प्रणाम करते हैं।

तात्पर्य यही हुआ कि सब के ध्येय, सबके आराध्य, सबके उपास्य वे भगवान हैं, यह बात समस्त शास्त्रों के मंथन से निर्णित हो गई कि सबके आराध्य, उपास्य, सेव्य भगवान हैं और भगवान की अराध्या, उपास्या, सेव्या गोमाता है, गोवंश है। इसलिए भगवान इष्ट और गोमाता अतिइष्ट है। इनकी इष्ट होने से गोमाता अतिइष्ट है। सेव्य की सेवा होती है और सेव्य भगवान हैं, इसका तात्पर्य यह है कि हम गाय की सेवा चतुष्पाद पशु के रूप में न करें, गाय की सेवा साक्षात् अपने आराध्य, उपास्य, इष्ट देव के रूप में करें, तब तो बनेंगी गोसेवा और इस पवित्र दृष्टि के बारे में अभी स्वामीजी आज चर्चा कर रहे थे कि हमें अपनी दृष्टि शुद्ध करनी होगी। हमारी दृष्टिमें गाय के प्रति पशुता का भाव जब तक बना रहेगा तब तक सेवा के नाम पर अपराध बनते जायेंगे।

.....*शेष अगले अंक में*

देसी गोमाता का ए2 दूध
व
जर्सी का ए1 दूध का प्रभाव

विज्ञान का यह मानना है कि सृष्टि के आदि काल में भूमध्य रेखा के दोनों ओर एक गर्म भूखंड उत्पन्न हुआ था। से भारतीय परम्परा में जम्बूदीप नाम दिया जाता है। सभी स्तनधारी भूमि पर पैरों से चलने वाले प्राणी दोपाए, चौपाए जिन्हें वैज्ञानिक भाषामें अॅग्युलेट ममल के नाम से जाना जाता है, वे इसी जम्बूद्वीप पर उत्पन्न हुए थे। इस प्रकार सृष्टि में सबसे प्रथम मनुष्य और गौ का इसी जम्बूद्वीप भूखंड पर उत्पन्न होना माना जाता है। इस प्रकार यह भी सिद्ध होता है कि भारतीय गाय ही विश्व की मूल गाय है। इसी मूल भारतीय गाय का लगभग 8000 साल पहले, भारत जैसे गर्म क्षैत्रों से यूरोप के ठंडे क्षैत्रों में जाना जाया माना जाता है।

दूध विज्ञान और देसी गायें:- जीव विज्ञान के अनुसार भारतीय गायों के 209 तत्व के डी.एन.ए में 67 पद पर स्थत एमिनो एसिड प्रोलीन पाया जाता है। इन गायों के ठंडे यूरोपीय देशों के पलायन से भारतीय गाय के डी.एन.ए में प्रोलीन एमीनोएसिड हिस्टीडीन के साथ उत्परिवर्तित हो गया। इस क्रिया को वैज्ञानिक भाषा में म्युटेशन कहते है।

मूल गाय के दूध में प्रोलाईन अपने स्थान 67 पर बहुत दृढ़ता से आग्रह पूर्वक अपने पड़ोसी स्थान ६६ पर स्थित अमीनोएसिड आइसोल्यूसीन से जुड़ा रहता है । परन्तु जब प्रोलीन के स्थान पर हिस्टिडीन आ जाता है तब इस हिस्टिडीन में अपने पड़ोसी स्थान ६६ पर स्थित आइसोल्युसीन से जुड़े रहने की प्रबल इच्छा नहीं पाई जाती।

Hestidine, मानव शरीर की पाचन क्रिया में आसानी से टूट कर बिखर जाता है। इस 7 एमीनोएसिड के प्रोटीन को बीसीएम 7 (बीटा Opioid (narcotic) अफीम परिवार का मादक तत्व है। जो बहुत शक्तिशाली Oxident ऑक्सीकरण एजेंट के रूप में मानव स्वास्थ्य पर अपनी श्रेणी के दूसरे अफीम जैसे ही मादक तत्वों जैसा दूरगामी दुष्प्रभाव छोड़ता है। जिस दूध में यह उस दूध को वैज्ञानिकों ने ए 1 दूध का नाम दिया हैं। यह दूध उन विदेशी गायों में पाया जाता है जिनके डीएन में 67 स्थान पर प्रोलीन न हो कर हिस्टिडीन होता है।

आरम्भ में जब दूध को बीसीएम 7 के कारण बड़े स्तर पर जानलेवा रोगों का कारण पाया गया तब न्यूजीलैंड के सारे डेरी उद्योग के दूध का परीक्षण हुआ। सारे डेरी दूध पर किये जाने वाले प्रथम अनुसंधान में जो दूध मिला वह बीसीएम 7 से दूषित पाया गया। इसीलिए यह सारा दूध ए 1 कहलाया। तदुपरांत ऐसे दूध की खोज आरम्भ हुई बीसीएम 7 रहित दूध को ए2 नाम दिया गया। सुखद बात यह है कि देसी गाय का दूध ए2 प्रकार का दूध ा पाया जाता है। देसी गाय के दूध में यह स्वास्थ्य नाशक मादक विष तत्व बीसीएम 7 नहीं होता। आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान से अमेरिका में यह भी पाया गया कि ठीक से पोषित देसी गाय के दूध और दूध के बने पदार्थ मानव शरीर में कोई भी रोग उत्पन्न नहीं होने देते। आज यदि भारतवर्ष का डेरी उद्योग हमारी देसी गाय के ए2 दूध की उत्पादकता का महत्व समझ लें तो भारत सारे

विश्व डेरी दूध व्यापार में सब से बड़ा दूध निर्यातक देश बन सकता है।

देसी गाय की पहचानः- आज के वैज्ञानिक युग में यह भी महत्व का विषय है कि देसी गाय की पहचान प्रामाणिक तौर पर हो सके। साधारण बोल चाल में जिन गायों में कुकुभ, गलकम्बल छोटा होता है उन्हें देसी नहीं माना जाता और सब को जर्सी कह दिया जाता है।

प्रामाणिक रूप से यह जानने के लिए कि कौन सी गाय मूल देसी गाय की प्रजाति की हैं, गौ का डीएनए जाँचा जाता है। इस परीक्षण के लिए गाय की पूंछ के बाल के एक टुकड़े से ही यह सुनिश्चित हो जाता है कि वह गाय देसी मानी जा सकती है या नहीं। यह अत्याधुनिक विज्ञान के अनुसंधान का विषय है।

पाठकों की जानकारी के लिए भारत सरकार से इस अनुसंधान के लिए आर्थिक सहयोग के प्रोत्साहन से भारतवर्ष के वैज्ञानिक इस विषय पर अनुसंधान कर रहे हैं और निकट भविष्य में वैज्ञानिक रूप से देसी गाय की पहचान सम्भव हो ससकेगी।

ए1 दूध का मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभावः- जन्म के समय बालक के शरीर में brain barrier नहीं होता है। स्तन पान कराने के बाद ३-४ वर्ष की आयु तक शरीर में यह ब्लडब्रेन बैरियर स्थापित हो जाता है। इसीलिए जन्मोपरांत माता के पोषण और स्तन पान द्वारा शिशु को मिलने वाले पोषण का, बचपन ही में नहीं, बड़े हो जाने पर भविष्य में मस्तिष्क के रोग और शरीर की रोग निरोधक क्षमता, स्वास्थ्य और व्यक्तित्व के निर्माण में अत्यधिक महत्व बताया जाता है।

बाल्य काल के रोगः- आजकल भारत वर्ष ही में नहीं सारे विश्व में, जन्मोपरान्त बच्चों में जो Autism बोध अक्षमता और Diabetes Tyoe 1 मधुमेह जैसे रोग बढ़ रहे हैं उन का स्पष्ट कारण ए1 दूध का बीसीएम 7 पाया जाना है।

वयस्क समाज के रोगः- मानव शरीर के सभी Metabolic degenerative disease शरीर के स्वजन्य रोग जैसे उच्च रक्तचाप, हृदय रोग तथा मधुमेह का प्रत्यक्ष सम्बन्ध बीसीएम 7 वाले ए1 दूध से स्थापित हो चुका है। यही नहीं बुढ़ापे के मानसिक रोग भी बचपन में ए1 दूध का प्रभाव के रूप में भी देखे जा रहे है। दुनिया भर में डेयरी उद्योग आज चुपचाप अपने पशुओं की प्रजनन नीतियों में 'अच्छा दूध अर्थात बीसीएम 7 मुक्त ए2 दूध' के उत्पादन के आधार पर बदलाव ला रही हैं।

शोध इस विषय पर भी किया जा रहा है कि किस प्रकार अधिक ए2 दूध देने वाली गायों की प्रजातियाँ विकसित की जा सकें।

डेरी उद्योग की भूमिकाः- मुख्य रूप से यह हानिकारक ए1 दूध भारत वर्ष में यह विषय डेरी उद्योग के गले आसानी से हर प्रकार के दूध को एक जैसा ही समझता आया है। उनके लिए देसी गाय के ए2 दूध और विदेशी ए1 दूध में कोइ अंतर नहीं होता था। गाय और भैंस के दूध में भी काई अंतर नहीं माना जाता। सारा ध्यान अधिक मात्रा में दूध और वसा देने वाले पशु पर ही होता है। किस दूध में क्या स्वास्थ्य नाशकतत्व हैं, इस विषय पर केन्द्रिय नहीं है।

भारत के किए गए NBAGR (राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो) द्वारा एक प्रारंभिक अध्ययन के अनुसार यह अनुमान है कि भारत वर्ष में ए1 दूध देने वाली गायों की संख्या 15 प्रतिशत से अधिक नहीं है। भारतवर्ष में देशी गायों के संसर्ग की संकर नस्ल ज्यादातर डेयरी क्षैत्र के साथ ही हैं।

आज सम्पूर्ण विश्व में यह चेतना आ गई है कि बाल्यावस्था में बच्चों को केवल ए2 दूध ही देना चाहिये। विश्व बाजार में न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, कोरिया, जापान और अब अमेरिका में प्रमाणित ए2 दूध के दाम साधारण ए1 डेरी दूध के दाम से कहीं अधिक हैं। ए2 दूध देने वाली गाय विश्व में सबसे अधिक भारतवर्ष में पाई जाती हैं। यदि हमारी देसी गोपालन की नीतियों को समाज और शासन का प्रोत्साहन मिलता है तो सम्पूर्ण विश्व के लिए ए2 दूध आधारित बालाहार का निर्यात भारतवर्ष से किया जा सकता है।

यह एक बड़े आर्थिक महत्व का विषय है। छोटे गरीब किसानों की कम दूध देने वाली देसी गाय के दूध का विश्व में जो आर्थिक महत्व हो सकता है उसकी ओर हमने कई बार भारत सरकार का ध्यान दिलाने के प्रयास किये हैं परन्तु दुख इस बात का है कि गाय की कोई भी बात कहो तो उस में साम्प्रदायिकता दिखाई देती है, चाहे कितना भी देश के लिए आर्थिक और सामाजिक स्वास्थ्य के महत्व का विषय हो।

होल्स्टिन फ्रीजियन प्रजाति की गाय में ही मिलता है, यह भैंस जैसी दिखने वाली, अधिक दूध देने के कारण सारे डेरी उद्योग की पसन्दीदा गाय है। होल्स्टीन फ्रीजियन दूध के ही कारण लगभग सारे विश्व में डेरी का दूध ए१ पाया गया। विश्व के ारे डेरी उद्योग और राजनेताओं की आज यही कठिनाई है कि अपने सारे ए१ दूध को एकदम कैसे अच्छे ए2 दूध में परिवर्तित करें। आज विश्व का सारा डेरी उद्योग भविष्य में केवल ए2 दूध के उत्पादन के लिए अपनी गायों की प्रजाति में नस्ल सुधार के नये कार्यक्रम चला रहा है। विश्व बाजार में भारतीय नस्ल के गीर वृषभों की इसीलिए बहुत मांग भी हो गयी है। साहीवाल नस्ल के अच्छे वृषभ की भी बहुत मांग बढ़ गयी है।

सबसे पहले यह अनुसंधान न्यूजीलैंड के वैज्ञानिकों ने किया था। परन्तु वहाँ के डेरी उद्योग और सरकारी तंत्र की मिलीभगत से यह वैज्ञानिक अनुसंधान छुपाने के प्रयत्नों से उद्विग्र होने पर, 2007 में Devil in the milk illbness, health and politics A1 and A2 milk. नाम की पुस्तक Keith Woodford कीथ वुड्फोर्ड द्वारा न्यूजीलैंड में प्रकाशित हुई। उपरूल्लेखित पुस्तक में विस्तार से लगभग ३० वर्षों के विश्व भर के आधुनिक चिकित्सा विज्ञान और रोगों के अनुसंधान के आंकड़ों के आधार पर यह सिद्ध किया जा सका है कि बीसीएम 7 युक्त ए1 दूध मानव समाज के लिए विष तुल्य है।

लेखक ने भारत में 2007 में ही इस पुस्तक को न्यूजीलैंड से मंगा कर भारत सरकार और डेरी उद्योग के शीर्षस्थ अधिकारियों का इस विषय पर ध्यान आकर्षित कर के देसी गाय के महत्व की ओर वैज्ञानिक आधार पर प्रचार और ध्यानाकर्षण का एक अभियान चला रखा है। परन्तु अभी भारत सरकार ने इस विषय को गम्भीरता से नहीं लिया है।

डेरी उद्योग और भारत सरकार के गोपशु पालन विभाग के अधिकारी व्यक्तिगत स्तर पर तो इस विषय को समझने लगे हैं। परन्तु भारतवर्ष की और डेरी उद्योग की नीतियों में बदलाव के लिए जिस नेतृत्व की आवश्यकता होती है उस के लिए तथ्यों के अतिरिक्त सशक्त जनजागरण भी आवश्यक होता है। इसके लिए जन साधारण को इन तथ्यों के बारे में अवगत कराना भारतवर्ष के हर देश प्रेमी गोभक्त का दायित्व बन जाता है। विश्व मंगल गो ग्रामयात्रा इसी जन चेतना जागृति का शुभारम्भ है।

अन्तःकरण-चिकित्सा

संभारः- हिन्दुसंस्कृति अंक

मनुष्य दुखी क्यों होता है? दुःखका कारण क्या है? दुःख कैसे उत्पन्न होता है? वासनामयी भावना ही दुःखका कारण है। वासना की भावनामें डूबकर, उसमें घुलकर मनुष्य अपना आत्मत्व खो बैठता है। आत्मा खो जाने से सर्वस्व खो जाता है। यह आर्यशास्त्रकारों का मत है।

पाश्चात्त्य मानसवेत्ताओं के कथनानुसार (१) अनुकूल भावना, (२) प्रतिकूल-भावना, (३) निरालम्ब भय, (४) चेतन द्रव्य का असाधारण क्षोभ- ये चार कारण हैं। आर्यशास्त्रकारों के अनुसार भेदभावना, रागवासना, द्वेषवासना, अस्मिताकी वासना, अभिर्निवेश वासना- ये सब वासनाएँ जीवनसंगिनी हैं।

दूसरी भूमिकामें भूख-प्यास केवल शरीरनिर्वाहक भावना है। आगे चलकर मनोभावका प्रदेश आता है। इसके पांच वर्ग है- भय, क्रोध, स्नेह, अहंकार, काम। इन सबकी रचना चेतन द्रव्यमें होती है। इनमें बुद्धि सम्मिलित नहीं है। दुःखका सामान्य लक्षण प्रतिकूलता का अनुभव करनेवाली चित्तकी स्थिति है। दुःख दो प्रकारके हैं, शरीर और मानस। शरीर की पीड़ा और दुःखको सब कोई जानते हैं और भौतिक उपचारद्वारा उसकी चिकित्सा की जाती है। उसमें भौतिक उपचारकी प्रधानता रहती है। किंतु मानसिक रोगोंके लिये मानसिक तथा आध्यात्मिक चिकित्सा की आवश्यकता होती है।

आजकल मनुष्यका मन इतना संवेदनशील और दुर्बल हो गया है, संसारकी विपरीत परिस्थितिसे तथा सहन करनेकी शक्तिका अभाव होनेसे, बाहरी क्षोभसे ज्ञानतन्तुओंके मर्मव्यूह पर ऐसा अप्रतिहत आघात होता है तथा शोभका प्रवाह मेरूदण्ड के ऊर्ध्वप्रदेश-चक्रोंमें से होकर मस्तिष्कको ऐसा जड और बुद्धिशून्य कर देता है कि मनका सन्तुलन **नहीं रहने पता विचारशक्ति नष्ट हो जाती है।** आत्मविश्वासका अभाव हो जाता है; मनुष्य साहसहीन, उत्साहहीन हो जाता है।

मानसशास्त्रका यह सार-सिद्धान्त है कि चिन्ता, शंका, भ्रम, राग, द्वेष, क्षोभ, विक्षेप, शोक, विषाद, भय, काम, क्रोध, घृणा, संकोच, लज्जा, अहंकार और आत्महीनताकी भावनाओं का अधिक चिन्तन करते रहनेसे मनुष्य अपने मक्तिष्कपरसे अधिकार खो बैठता है, जिससे अनेक प्रकारके मानसिक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। अत्यधिक श्रम करनेसे, व्यापार-धंधेमें आर्थिक हानिसे, प्रियजनके वियोगसे, शोकमें डूबे रहनेसे, अनुकूल परिस्थिति प्राप्त न होनेसे, विपत्तियोंके भारसे दब जानेसे, अपने विचारोंको भीतर-ही-भीतर घोंटते रहनेसे मनुष्यको अनुत्साह, उदासीनता, विषाद, खिन्नता होने लगती है; फिर विषादपूर्ण उन्माद हो जाता है। इस प्रकारके मानसिक रोगीको इतनी मानसिक अशान्ति रहती है कि एकान्तमें जाकर आत्मघात करनेकी इच्छा प्रबल हो जाती है। ऐसे मानसिक रोगी निराशामें इतने डूब जाते हैं कि किसी बातमें उन्हें रस नहीं मालूम होता, जीवन भाररूप प्रतीत होने लगता है। अन्य प्रकारके कुछ मानसिक रोगियोंके मनमें आत्म-तिरस्कारकी भावना आरुढ़ रहती है। वे विचार करते रहते है कि मैंने बड़े पाप किये हैं और यह सब दुःख उनके पापों का ही परिणाम है।

भारतके एक सुप्रसिद्ध दैनिक पत्रके सम्पादक मेरे यहाँ आये हैं। उनको एक जबरदस्त मानसिक ग्रन्थि है- ये अकारण भद्दी गालियाँ बका करते हैं, शेष सब व्यवहार ठीक तरह करते हैं। वे अच्छी तरह जानते हैं कि समाजमें

रहकर इस प्रकार भद्दी हरकत बुरी है किंतु अनैच्छिक अचेतन मनके बलात्कारकी यह मनोव्यथा है, जिसे उनका चेतन मन रोक नहीं सकता; क्योंकि उनके चेतन मनका आधिपत्य वे खो बैठे हैं। इसी कारण इस प्रकारकी अस्वाभाविक चेष्टा करनेमें विवश हैं। उनका जाग्रत् मन बलवान् होता जायेगा तो वे अपने अन्तर्मनके इस प्रबल अनैच्छिक आवेगपर अधिकार कर सकेंगे।

दूसरी एक महिला भी यहाँ आयी हैं, जो रात्रिके समय विष्ठा (मल) को एक कपड़ेमें बाँधकर अपने पतिके सिरहाने रख देती हैं और पश्चात् पूछनेपर कहती हैं- मुझे कुछ पता नहीं, यद्यपि यह क्रिया वह नित्य करती हैं। वह नहीं चाहतीं कि मैं ऐसी गंदी हरकत करूँ; किंतु उनके मस्तिष्कसे अन्तर्मनका प्रबल आवेग बलात्कारसे, उनकी अनिच्छा और अज्ञानसे ऐसी क्रिया करवाता है- जिसका उन्हें पता नहीं है। मानसिक प्रयोगसे उनका जाग्रत् मन अब इतना बलवान् हो गया है कि अब यह मलिन क्रिया वह नहीं करती। अब वह इस अनैच्छिक मनोवेगके वशीभूत नहीं है।

मानसशास्त्रियोंका यह कथन अक्षरशः सत्य है कि रोग मनमें है। मारता भी मन है और जिलाता भी मन है। आजकल अनेकानेक ऐसे असाध्य शारीरिक और मानसिक रोगोंसे लोग ग्रस्त हैं और सब प्रकारकी वैज्ञानिक चिकित्सा होनेपर भी वे रोग निर्मूल नहीं होते। चिकित्सक उन रोगोंका वास्तविक कारण स्थूल निदानसे नहीं जान सकते; क्योंकि उनका मूल कारण मनोमयकोष और प्राणमय कोषमें है।

मनुष्य खाता-पीता है। जिन पदार्थों और प्राणियोंसे वह सम्बन्ध रखता है, जिन विचारोंमें डूबा रहता है, उन सबसे प्राणका स्वरूप बनता है। जड़ और चेतन सब पदार्थों से प्राणकी लहरें निकलती हैं और बहती हैं, इसलिये उन सबका प्रभाव अवश्य पड़ता है। प्राणका नाड़ीतन्त्रसे निकट सम्बन्ध है। मनोमयकोषमें विकार होनेसे प्राणमयकोषमें गड़बड़ होती है, प्राणमयकोषमें अस्तव्यस्तता होनेसे मनोमयकोषमें। मान्त्रिक चिकित्सामें प्राण-विनिमयका ही चमत्कार है। पाश्चात्त्य देशोंमें मानसिक रोगोंको दूर करनेके लिये मनोविश्लेषणका खूब प्रचार है। जुंग, ऐडलर, फ्रायड आदि मानसशास्त्र वेत्ताओंने लगभग पचास हजार पृष्ठोंमें इस विषय पर बड़ा ही अनुभवपूर्ण, गवेषणात्मक और उपयोगी साहित्य लिखा है। भारतमें भी इसका प्रचार होने लगा है; किंतु देखना है कि उसका प्रयोग हम किस प्रकार करें। उन्होंने कामवासनाके दमन या कामवासना की अपूर्तिको ही मानसिक रोगोंका कारण माना है। उनके मनोविश्लेषणकी प्रणालीके अनुसार भारतीय संस्कृतिके वातावरणमें हम स्त्रियोंसे उस प्रकार प्रश्नोत्तर नहीं कर सकते। स्त्रियाँ उसके लिये तैयार न होंगी और भारतीय शिष्टाचार इस प्रकार के व्यवहारकी आशा नहीं कर सकता।

गीताके दो श्लोकोंमें मनोविज्ञानका निष्कर्ष भरा हुआ। अर्जुनके पूछनेपर कि यह मनुष्य किसकी प्रेरणासे पाप करता है, कौन इसे पापमें लगाता है, उत्तरमें भगवान कहते हैं-

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।

रजोगुणसे पैदा हुआ यह 'काम' है और यही 'क्रोध' है। इसीने ज्ञानको ढक रक्खा है।

ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते।
सगंत्संजायेते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।।
क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।

विषयों का निरन्तर ध्यान करनेसे आदमी का उनमें लगाव हो जाता है, लगाव अर्थात् संगसे काम अर्थात् उन्हें प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न होती है। कामसे क्रोध पैदा होता है,

क्रोधसे भूल होती है, भूलसे स्मृति बिगड़ती है, स्मृति विगड़ने से बुद्धिका नाश और बुद्धिका नाश होनेसे मनुष्यका सर्वनाश हो जाता है। विचार-शास्त्रका यह कैसा सुन्दर सिलसिला है।

विषयोंमें चित्त लगानेसे नाड़ियों के द्वारा सूक्ष्म विचार मस्तिष्कमें पहुँचता है, फिर सूक्ष्मशरीर में, प्राणमयकोषमें और वहाँ से मनोमयकोषमें, जहाँ विषयका ज्ञान होता है। यह प्रणाली सदा प्रचलित रहती है। ध्यानसे चित्त विषयोंमें बस जाता है और उसी प्रकारका हो जाता है।

मनोविश्लेषण-चिकित्साद्वारा मानसिक रोगीकी दबी हुई विस्मृत भावनाको-जिस कारण मानसिक रोग उत्पन्न हुआ है, उसको चेतन मनके स्तरपर या स्मृतिपर लाना होता है, जिससे मस्तिष्कका खिंचाव हल्का हो जाय। फिर आत्मसूचना-द्वारा मनको बलवान् बनाकर आध्यात्मिक उच्चस्तरपर आरुढ़ करना होता है, जिससे फिर आत्महीनताकी भावना अन्तस्तलमें प्रवेश न कर सके।

प्राचीन आध्यात्मिक चिकित्सा-प्रणाली

हमारे प्राचीन ऋषिलोग मानसिक स्तरसे बहुत ऊँचे उठे हुए थे और आध्यात्मिक चिकित्साके महत्त्वको अच्छी प्रकार जानते थे। वेदमन्त्रोंमें मानसिक और आध्यात्मिक चिकित्साका विशद वर्णन है, जिनमें आध्यात्मिक उपचार बताया है। संसार में विरले ही ऐसे मनुष्य हैं, जिन्हें अपनी शक्तिका परिचय हो। ध्यान, जप, प्रार्थनासे जब मनुष्य अपने वास्तिविक तत्त्वको जाने लेता है, तब उसमें प्रबल संकल्पशक्ति जाग्रत् हो जाती है। प्रत्येक व्यक्तिमें एक स्वाभाविक विचित्र दैवी शक्ति विद्यमान रहती है, जो दूसरोंके दुःखों और रागोंको दूर कर सकती है। इसको जगानेके लिये ध्यानके समय मंगलमय परमात्मापर जो सदा-सर्वदा तुममें विद्यमान है चित्तको एकाग्र कर दो; अपने सच्चिदानन्द स्वरूपको गम्भीरता और एकाग्रताके साथ स्मरण करो। ऐसा करनेसे तामसिक और राजसिक वृत्तियोंके प्रवाहसे तुम्हारा सम्बन्ध विच्छेद हो जायगा, सात्विकता और पवित्रताकी धारा तुममें बहने लगेगी और तुम्हारा सम्बन्ध आनन्द, शान्ति और शक्तिके स्रोतके साथ हो जायगा। तुम सारी बाधाओं और प्रलोभनोंपर विजय प्राप्त कर लोगे और दूसरोंके दुःखोंका सहज ही निवारण कर सकोगे।

उपचार

कोई भी जो मानसिक रोग या अन्य रोगसे पीड़ित हो, उसको उत्तरकी और पाँव करके लेट जाने दो। शरीरके सब अवयवोंको ढीला करा दो- शिथिल करा दो, कहीं जरा भी तनाव न हो- मृतवत् करा दो। स्त्री हो तो उसकी बायी ओर, अथवा पुरुष हो तो उसकी दाहिनी ओर बैठकर उपचार करो। किसी भी रोगीकी चिकित्सा करनेके पूर्व प्रार्थना करना आवश्यक है। प्रार्थनामें अद्‌भुत शक्ति है, अपार शक्ति है। जप, ध्यान, एकाग्रता ये सभी प्रार्थनाके रूपान्तर हैं।

प्रार्थना करते समय रोग और रोगी का नाम लेकर दोनोंको प्रकाशमय जगत्‌में देखो- इस प्रकार भावना करो कि वह प्रकाशमय जगत्‌में है और प्रकाश उसके भीतर भरा है। इस प्रकार रोग और रोगीको देखनेसे तत्काल शान्ति और विश्रामका अनुभव होगा। यह क्रिया ध्यानस्थ होकर करनी चाहिये। प्रार्थना करो और हाथ फेरकर रोग दूर करो। कम-से-कम २१ बार रोगीके सिरसे पैरकतक, उसे बिना छुए हुए, हाथ फेरो। इस बातका ध्यान रक्खो कि रोगीका स्पर्श करते हुए हाथ फेरने पर चिकित्साके पश्चात हाथ धो डालो। निम्नलिखित वैदिक भावना धीरे-धीरे बोलकर दृढ़ भावनाका संचार करो।

वैदिक आत्मसूचना-पद्धति

ऊँ अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुवुकादधि।
यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते।।1।।

हे रोगी मनुष्य! मैं तेरी दोनों आँखों, दोनों नथुनों, दोनो कानों, ठुडी, सिर और जिहवासे भी रोगोंको भगाये देता हूँ।

ऊँ ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात्।
यक्ष्मं दोषण्यमंसाभ्यां बाहुभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते।।2।।

हे व्याधिग्रस्त जीव! तेरे गलेकी १४ सूक्ष्म नाड़ियोंके, हँसली, एवं वक्षःस्थलकी नाड़ियों, दोनों कन्धों, दोनों भुजाओं और जिसमेंसे क्रमशः सब हड्डियाँ निकलती हैं- इन सबके रोगोंको दूर करता हूँ।

ऊँ हृदयात्ते परि क्लोम्नो हलीक्ष्णात् पार्श्वाभ्याम्।
यक्ष्मं मतस्नाभ्यां प्लीन्हो यक्नस्ते वि वृहामसि।।3।।

हे रोगी! मैं तेरे हृत्कमलसे, पित्ताध ाारोंसे, दोनों बगलोंसे, गुर्दोंसे, प्लीहा और यकृतसे रोगका निवारण करता हूँ।

ऊँ आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्टोरूदरादधि।
यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्या वि वृहामि ते ।।4।।

हे व्याधिग्रस्त प्राणी! मैं तेरी आँतों, गुदाके चक्रों तथा नाड़ियों, उदर, दोनों कोरवोंकी थैली और नाभिचक्रके स्नायुजालसे रोग निवृत्त करता हूँ।

ऊँ ऊरूभ्यां ते अष्टीवद्भ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम्।
यक्ष्मं भसद्यं श्रोणिभ्यां भासदं भंससो वि वृहामि ते।।5।।

हे रोगग्रस्त जीव! मैं तेरी जंघाओ, घुटनों, एड़ियों, पैरों के पंजों, कूल्हों- नितम्बों, कमर और गुह्य स्थानोंसे रोगको दूर करता हूँ।

ऊँ अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः।
यक्ष्मं पाणिभ्यामगुंलिम्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते।।6।।

हे रोगी! मैं तेरी हड्डियों, मज्जा आदि, पटों, नाड़ियों और हाथों, अँगुलियों तथा नखोंसे सब रोग दूर करता हूँ।

ऊँ अंगे-अंगे लोम्निलोम्नि यस्ते पर्वणिपर्वणि।
यक्ष्मंत्वचस्यंतेवयंकश्यपस्य वीबर्हेणविष्वचंविवृहामसि।।7।।

हे रोगसे दुखी प्राणी! तेरे ऊपर न कहे हुए प्रत्येक अंगमें संपूर्ण रोमकूपोंमें और प्रत्येक जोड़में जो रोग हो गया है, उस रोगको मैं दूर करता हूँ और तेरी त्वचामें जो रोग पहुँच गये है, उन्हें दूर करता हूँ। तेरे नेत्र आदि संपूर्ण अंगोंमें व्याप्त रोगको महर्षि कश्यपके विबर्ह मन्त्रसे दूर करता हूँ।

भयके रोगसे मुक्ति और रक्षाका मन्त्र

अभयं मित्रादभयममित्रा-दभयं ज्ञातादभयं पुरो यः।
अभयं नक्तमभयं दिवा नःसर्वाः आशा मम मित्रं भवन्तु।।

'तुम मित्रोंसे तथा जो मित्र नहीं हैं, उनसे भी निर्भय हो। जाने हुए और न जाने-देखे हुए पुरुषों और स्थानोंसे भी, दिनमें और रात्रिमें भी, निर्भय हो। सब दिशाएँ तुम्हारी मित्र हो रही हैं। परमात्मा सब प्रकार से तुम्हारा सहायक और रक्षक है। तुम परम निर्भय हो।'

इस भावनाको बीस बार दुहराओ, रोगीके अन्तर्मनपर विलक्षण प्रभाव पड़ता है। ध्यानसे चिकित्सा करनेके समय अपने हृदयको परमात्माके प्रेमसे खूब भर लो, जिससे प्रेम, आरोग्य, शक्तिकी धारा तुम्हारे शरीरसे रोगीमें प्रवाहित होने लगे।

ओषधि खाऊँ न बूटी लाऊँ, ना कोई बैद बुलाऊँ।
पूरण बैद मिले अबिनासी, वाही को नबज दिखाऊँ।।

परमात्मा ही परम वैद्य है। उसीकी शरण और छायामें चिकित्सार्थ स्वयंको और सबको शरणागत कर दें- निर्मय और निश्चन्त रहें। धन्वन्तरी महाराज कह गये हैं-

अच्युतानन्तगोविन्दनामोच्चारणभेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

'अच्युत, अनन्त, गोविन्द- इन परमात्माके नामोंके उच्चारणरूपी ओषधिसे सब रोग नष्ट होते हैं, मैं सत्य कहता हूँ, मैं सत्य कहता हूँ।'

ऊँ आरोग्यम् ऊँ आरोग्यम् ऊँ ऊँ आरोग्यम्
ऊँ आनन्दम् ऊँ आनन्दम् ऊँ आनन्दम्

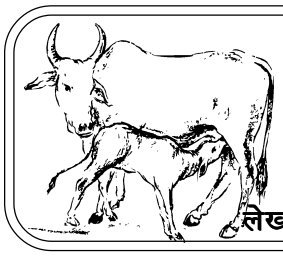

गो-विज्ञान

लेखकः- उत्तम महेश्वरी

जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है, तो कोई नहीं कहता कि उसका विटामिन, प्रोटीन या केमिकल अन्त हुआ है, सभी कहते हैं कि उसका प्राणान्त हुआ है अर्थात् हमारे जीवन का आधार ''प्राण'' है न कि केमिकल। भारतीय ऋषियों ने रसायन से भी गहरे उस प्राण के स्तर पर जाकर अनुसंधान किया। इस प्राण के आधार पर ही हमारा विज्ञान विकसित हुआ और उसी पर हमारी संस्कृति और हमारी परम्पराएँ विकसित हुई। प्राण से अनजान आज के वैज्ञानिक हमारी बातें समझ नहीं पाते। लेकिन दुःख की बात है कि वे इस विज्ञान को समझने की बजाय कह देते हैं कि हमारे केमिकल आधारित जड़ विज्ञान के आध ाार पर आपकी बातें सिद्ध नहीं होती इसलिए आपका आधार वैज्ञानिक नहीं है। यह वैसा ही है जैसे केवल अंक गणित जानने वाला बच्चा बीजगणित के विद्वान को कहे कि आपको गणित नहीं आती क्योंकि गणित अंकों पर आधारित है अक्षरों पर नहीं।

हमारी संस्कृतिमें माँ शब्दका एक विशेष अर्थ है- जो हमारे प्राणों का सबसे अधिक पोषण/रक्षण करती है, हमने उसे माँ कहा। जन्म लेने के बाद जननी हमारे प्राणोंका सबसे अधिक पोषण/रक्षण करती है, इसलिए हम जननी को माँ कहते हैं; जिस धरती पर हम पैदा हुए या जहाँ के हमारे जीन्स हैं उस वातावरण में जो आहार उत्पन्न होता है, वह हमारा सबसे अधिक पोषण/रक्षण करता है, इसलिए धरती को हम माँ कहते हैं; वनस्पति जगत में तुलसी हमारे प्राणों की सबसे अधिक रक्षा करती है, इसलिए हम तुलसीको माँ कहते हैं, पशु जगत में गाय हमारा सबसे अधिक पोषण/रक्षण करती हैं, इसलिए गाय को भी हम माँ कहते हैं और गाय इन सभी माताओं का भी पोषण करती है इसलिए गाय को पूरे विश्व की माता भी कहते हैं- 'गावो विश्वस्य मातरः' 'मातरः सर्वभूतानाम्'। गाय से हमारे प्राणों का पोषण/रक्षण किस प्रकार होता है, उस पर अति संक्षेप में विषय रखा जा रहा है।

पंचगव्यः- गाय की जिन पाँच चीजों से हमारे प्राणों का सबसे अधिक/रक्षण होता है, उन्हें हम पंचगव्य कहते हैं। ये हैं- दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र।

गाय का दूधः- यूरोपके वैज्ञानिक गाय के दूध को जहर कहते हैं, यह बात सही है क्योंकि वे जिसे गाय कहते हैं वह वास्तव में यूरास जैसे जंगली जानवरों के जीन्स से छेड़छाड़ कर बनाई गई नस्लें है जिन्हें वे बोस टोरस कहते हैं, जबकि हमारी गायों को वे बोस इंडिका कहते हैं। हमारी गायों के दूध को तो आयुर्वेद ने अमृत माना है। इसलिए इस लेख में 'गाय' शब्द केवल शुद्ध भारतीय नस्लों की गायों के लिये ही प्रयुक्त हुआ है और वास्तव में भी केवल वो ही गाय है जिनके गल कम्बल और कुक्कुद (थुम्भी) होती हो।

जब किसी व्यक्ति को गंभीर रोग हो जाता है तो वैद्य उसे दुग्धकल्प करवाते हैं, जिसमें 40 दिन तक केवल दूध पर ही रखा जाता है और उसका कायाकल्प हो जाता है। गोधाम पथमेड़ा की गौशाला में इस समय १० संत दुग्धकल्प कर रहे हैं, जिनमें से एक का 10 वर्ष पुराना अस्थमा ठीक हो गया। मुम्बई के श्रीसंजय पटेल पिछले 6–7 वर्षोंसे केवल दूध पर ही है और पूरी तरह से स्वस्थ एवं सक्रिय हैं।

गाय का दहीः- गर्भ में प्राण की कमी के कारण बच्चों का विकास ठीक से नहीं होता और वे मंदबुद्धि या विकलांग होते हैं। ऐसे

माता-पिता का क्या हाल होता है, उसे हम सब जानते ही हैं। यदि गर्भवती माता को चांदी के प्याले में गाय का दूध जमाकर उसका दही प्रतिदिन खिलाया जाय तो विकलांग या मंदबुद्धि संतान नहीं होगी।

गाय का मक्खनः- गायके दही से बने मक्खन को खानेवाले बच्चों में वीर्य को धारण करने की शक्ति 17–18 वर्ष की आयु तक रहती है, इसके अभाव में 12–13 वर्ष की आयु में ही वीर्यका नाश होने लगा है। 12–13 वर्ष की आयु में ही वीर्य निकलने लगे और उसे 21 वर्ष की आयु तक कानूनन अविवाहित रहना पड़े तो व्यभिचार तो फैलेगा ही और जो सफल ब्रह्मचारी नहीं रह पाया उसका सफल गृहस्थ होना भी नीम के पेड़ पर आम लगने जैसा ही है। गर्भ निरोधक कंपनियों की दलाल यह सरकार नहीं चाहती कि देश में सदाचार बढ़े। लेकिन जो भी सामाजिक/आध्यात्मिक संगठन सदाचारी समाज चाहते हैं उन्हें शिक्षा व संस्कारों के साथ-साथ बच्चों को गाय का मक्खन खिलाने पर जोर देना चाहिए। लेकिन यहाँ पर एक बात विशेष ध्यान देने की है कि मक्खन का अर्थ बटर नहीं होता- बटर कच्चे दूध से निकली क्रीम से बनता है जबकि मक्खन, दही को यशोदा मैया की तरह मथकर निकाला जाता है।

गाय का घीः- 1. मस्तिष्क में प्राणों का प्रवाह रुक जानेसे मेरी माताजी को लकवे का आघात लगा था, जिससे उनका पूरा चेहरा टेढ़ा हो गया। तुरंत उन्हें लेटाकर नाक में गाय के घी की दो-दो बूँदे डाली, प्राणों का प्रवाह प्रारंभ हुआ, मस्तिष्क की कोशिकाएँ मरने से बच गई और 15 मिनिट में ही उनका चेहरा सीधा हो गया। यह प्रयोग सैकड़ों लकवे के मरीजों पर हो चुका है और पुराने मरीजों को भी कम से के 30 प्रतिशत लाभ अवश्य हुआ है।

2. जब मस्तिष्क में प्राणों का प्रवाह बहुत कम हो जाता है, तो व्यक्ति कोमा में चला जाता है, एक माताजी डेढ़ महीने से कोमा में थी, उनकी नाक में दो-दो बूँद गाय का घी डालते ही प्राणों का प्रवाह प्रारंभ हुआ और केवल तीन घंटे में ही उन्होंने आँखें खोल ली।

3. एक गरीब व्यक्ति के मस्तिष्क में खून के थक्के जम गये थे, जिससे वे चलते-चलते अचानक गिर पड़ते थे; डॉक्टरों ने ऑपरेशन का दो लाख रूपये खर्च बताया और उस पर भी 5 प्रतिशत रिस्क (खतरा)। नाक में दो बूँद घी के प्रयोग और साथ ही गोमूत्र के सेवन और एक-दो घरेलू उपचार से 15 दिन में ही वे एकदम स्वस्थ हो गये। आज इस बात को 5–6 वर्ष हो गये।

4. जिनके कान के पर्दे फट गये और डॉक्टर कहते हैं कि सर्जरी के अलावा इसका कोई उपचार ही नहीं है, उनके भी नाक में गाय के घी की दो-दो बूँदें डालने से 3 से 20 दिन के अंदर उनके कान का पर्दा जुड़ गया।

5. सायनस की समस्या में भी यह घी पहले ही दिन असर दिखाता है।

6. महिलायें बाल झड़ने से रोकने के लिए हजारों रूपये खर्च करती हैं, घी के इस प्रयोग से महिने-डेढ़ महीने में ने केवल बाल गिरना ही बंद होते है बल्कि फिर से नये बाल भी आने लगते है।

अब सोचिये जिस घी की बूँदें इतनी कीमती है वह घी कितना कीमती होगा? जो घी इतना कीमती है उस घी को देनेवाली गाय कितनी कीमती होगी?

प्राण विज्ञान के प्रति घोर अज्ञान के कारण आधुनिक वैज्ञानिकों ने गाय के घी को हानिकारक घोषित कर दिया। आजादी मिलने के बाद घी पर अनुसंधान करने के बजाय ऐसी-ऐसी तकनीकों का अविष्कार किया कि घी की प्राण शक्ति ही घट गई। जितनी पारंपरिक विधि से गाय की सेवा होगी और पारंपरिक विधिसे गायका घी तैयार किया जायेगा उतनी ही उस घी में प्राण शक्ति अधिक होगी

और जितनी आधुनिक तकनीकों से गाय की सेवा होगी और घी निकाला जायेगा, उतनी ही उसमें प्राणशक्ति कम होगी। मैंने जो घी के गुण बताये वह आधुनिक ढंग से बनाये घी के नहीं बल्कि पारंपरिक ढ़ंग से बनाये घी के हैं।

इतनी प्राणशक्ति घटने के बाद भी गाय के घी की तुलना किसी अन्य घी से नहीं हो सकती। गाय के घी को अन्य घी के समकक्ष रखना वैज्ञानिकों के घोर अज्ञान को ही दर्शाता है। घी पर प्रायः तीन आरोप लगाये जाते हैं – 1. घी मोटापा बढ़ाता है; 2. घी कैलेस्ट्रोल बढ़ाता है 3. घी पचने में भारी है इसलिए 40 वर्ष की आयु के बाद घी नहीं खाना चाहिए।

1. जहाँ अन्य सभी घी खाने से वजन बढ़ता है, गाय का घी खिलाकर मैंने बहुत से मोटे लोगों का वजन एक ही महीने में 7 से 10 किलो घटाया है। आयुर्वेद के अनुसार वात शरीर को एकदम पतला या मोटा बनाता है, गाय का घी वात को नियंत्रित करता है। जिससे पतले का वजन बढ़ाता है तो मोटे व्यक्ति का वजन घटता है।

2. कौलेस्ट्रोल के मरीजों को तो गाय का घी अवश्य खाना चाहिए। औषधियों से कौलेस्ट्रोल नियंत्रित (कंट्रोल) होता है, सामान्य (नॉर्मल) नहीं होता; जबकि छः महिने गाय का घी खाने से कौलेस्ट्रोल सामान्य हो जाता है। गाय के घी से अच्छा कौलेस्ट्रोल (HDL) बढ़ता है जबकि खराब कौलेस्ट्रोल (LDL) कम होता है, व्यक्ति चिड़चिड़ा हो जाता है। राजस्थान में जब किसी के दिमाग में कोई बात नहीं बैठती तो कहा जाता है कि घी खाओ तो दिमाग चलेगा।

3. जिन लोगोंको दूध नहीं पचता वे दूध में घी डालकर पीयें, दूध तो पचेगा ही एसिडीटी की वर्षों पुरानी समस्या में भी दो दिन में ही आराम हो जायेगा और लगातार एक महिने तक लेने से वह जड़ से खत्म हो जायेगी। अल्सर के रोगियों के लिए तो इससे श्रेष्ठ कोई आहार ही नहीं है। जिन्हें बिल्कुल भूख नहीं लगती उन्हें दो दिन में ही भूख लगने लग जायेगी। कब्ज से पीड़ित लोगों को पहले दिन ही राहत मिलेगी। बवासरीर के रोगियों को भी पहले ही दिन से रोग से मुक्ति मिलनी प्रारम्भ हो जायेगी। जिनके शरीर में किसी भी प्रकार का दर्द है उन्हें दूध में घी का सेवन करने से बड़ी राहत मिलती है। दुर्घटनाके कारण बिस्तर पर पड़े व्यक्ति को घी खिलाया जाय, तो उसका घाव बहुत ही जल्दी ठीक हो जाता है। मैंने ६ महीने से लकवे के कारण बिस्तर से उठनेमें असमर्थ 80 वर्षीय रोगी को इस प्रकार से घी खिलवाया तो तीन ही दिन में वे स्वयं ही उठकर बैठ गये। प्रसव के बाद स्त्री जब महीनेभर पूरी तरह बिस्तर पर होती थी, तो उसे महीनेभर में 10–15 किलो घी खिलाया जाता था। ऐसी माताओं के 8–10 संतान होने के बाद भी वे आज की 1–2 संतान को जन्म देनेवाली माताओं से अधिक स्वस्थ होती थी।

इसलिए मैं कहता हूँ कि 40 वर्ष की आयु तक घी न खाने पर शायद प्रकृति आपको माफ कर दे, लेकिन 40 वर्ष की आयु के बाद घी न खाने पर तो प्रकृति भी माफ नहीं करेगी।

गोमूत्रः- प्राणशक्ति से सम्पन्न होने के कारण गोमूत्र में इतने अद्‌भुत गुण है कि इसे अब तक तीन अमेरिकी पेटेंट सहित कई पेटेंट प्राप्त हो चुके हैं।

1. प्रायः औषधियाँ कम मात्रा में लेने पर धीमे असर करती है और अधिक मात्रामें लेने पर हानि पहुँचाती हैं। गोमूत्र उनकी इस कमी को दूर कर देता है। गोमूत्र में इतनी प्राणशक्ति है कि जिस किसी भी औषधि के साथ उसे मिलाया जाय वह उसकी शक्ति को कई गुणा बढ़ा देता है, उसे पोटेन्टाइज कर देता है। इसे (bioenhancer) के रूप में पेटेंट मिल चुका है।

2. भोजन बनाने व प्रीजर्व करने की नई-नई पद्धतियों के विकास के साथ-साथ हमारे भोजन में एन्टीऑक्सिडेंट्स की मात्रा

कम होती जा रही है। जिससे शरीर में विषतत्त्व बढ़ते जा रहे हैं। गोमूत्र एक बहुत ही बढ़िया एन्टीऑक्सिडेंट है, उसे एन्टीऑक्सिडेंट के रूप में भी पेटेंट मिल चुका है।

3. गोमूत्र बहुत ही बढ़िया एन्टी सेप्टिक, एन्टी बैक्टीरियल, एन्टी वायरल, एन्टी फंगल है। इन गुणों के लिए भी गोमूत्र को पेटेंट मिल चुका है।

4. गोमूत्रमें हानिकारक कोशिकाओंको नष्ट करने की अद्‌भुत शक्ति है। इसलिए कैंसर की औषधि के रूप में भी इसे पेटेंट मिल चुका है। 5. आयुर्वेद में पारा, गंधक, संखिया, धतूरा, भिलावा जैसे तेज विषों को गोमूत्र से शोधित कर उनसे औषधि बनाई जाती है अर्थात् गोमूत्र में इतनी प्राणशक्ति होती है कि वह विष को भी अमृत बना दे। आज हम जो भोजन कर रहे हैं, उनसे दुनियाभर के रासायनिक खाद और कीटनाशकों का विष हमारे शरीर में प्रवेश कर एकत्रित हो रहा हैं, इन्हें जब तक बाहर नहीं निकाला जाता, पूर्णतः स्वस्थ होना संभव नहीं। गोमूत्र बहुत ही तेजी से इन्हें विषहीन करने या शरीर से बाहर निकालने में समर्थ है। इसलिए स्वस्थ व्यक्ति को भी गोमूत्र का सेवन अवश्य करना चाहिए। शीतकाल में गोमूत्र एक बहुत ही अच्छे टॉनिक का काम करता है। जिनके शरीर में गर्मी अधिक है उन्हें वैद्य सलाह से गोमूत्र का सेवन करना चाहिए।

जिस तरह से आजादी के बाद शहरों और कस्बों के विकास के साथ-साथ बड़ी संख्यामें गायों की हत्या हुई है, उससे ताजे गोमूत्र का मिलना असंभव सा हो गया है। इसलिए गोमूत्र को अर्क-गोली और आसव के रूपमें सुरक्षित रखा जाता है। बहुतसी जड़ी-बूटियों के साथ इनकी औषधियों बनाई गई हैं। आप गौमाता की रक्षा के संकल्प के साथ इनका सेवन करें और फिर इस विज्ञान का चमत्कार देखें, तब आपको पता चलेगा कि शास्त्रों में जो कहा गया है कि गोमूत्र में गंगा का वास है उसका क्या अर्थ है।

गोबरः- गाय का पाँचवाँ गव्य है गोबर। गोबर शब्द वास्तव में गो वर है। 'वर के दो अर्थ हैं- 1 वरदान और 2. श्रेष्ठ। यह वास्तव में वरदान भी है और पाँचों गव्यों में सबसे श्रेष्ठ भी है। सबसे बड़ी दरिद्रता है रोग। घर में मिठाई का ढेर हो लेकिन डायबिटीज के कारण खा नहीं सकते, ब्लड प्रेशर के कारण बिना नमक का बेस्वाद भोजन करना पड़े, बहुत ही बढ़िया वक्ता हो लेकिन दम के कारण बोल नहीं सकता तो इससे बड़ी दरिद्रता और क्या होगी? इस रोगरूपी दरिद्रता का गोबर नाश करता है। इसलिए शास्त्र कहते हैं कि गोबर में लक्ष्मी का वास है। जर्मनी ने प्रयोग कर बताया कि जिस घर की दीवारें गोबर से लीपी हुई होती है, उस पर रेडियो एक्टिव रेंज काम नहीं करती।

जिन दिनों पानी के कारण बीमारियाँ-महामारियाँ फैलती हैं, उन दिनों घर की मटकी में पाँच-सात चिमटी गाय के गोबर की राख डाल दीजिये, बीमारियाँ आपके पास भी नहीं फटकेगी। इसका सबसे सरल तरीका है कि पूजा में अगरबत्ती जलाने की बजाय गाय के गोबर की धूपबत्ती जलायें और उसकी 4-7 चिमटी भस्म मटकी में डाल दें। एक बार मुझे एक जहरीला कीड़ा काट गया भयंकर जलन होने लगी जैसे ही मैंने उस पर गोबर की भस्म लगाई, एक ही मिनिट के अंदर जलन शांत हो गई। चोट पर भी यह भस्म सबसे तेज असर करती है। एक माताजी को बिस्तरपर पड़े रहनेके कारण बेड सारे हो गया, प्रतिदिन हजार रूपये खर्च होने के बाद भी स्थिति बद से बदत्तर होती चली जा रही थी। मैंने उनके घाव में गोबर की राख भरने के लिए कहा और एक ही महिने में उनका घाव 100 प्रतिशत ठीक हो गया। घर-घर में यदि गाय के गोबर की धूप जले तो यह औषधि तो सहज ही

सुलभ रहेगी। इस धूप से वायु भी शुद्ध होगी और वायुमंडल में ओजोन लेयर भी पुष्ट होगी, जिससे ग्लोबल वार्मिंग को कम करने का भी अद्‌भुत कार्य होगा।

गोबर की प्राण शक्ति के बीसों चमत्कार हैं- यकृत (Liver) के कैंसर के मरीज के लिए गोबर का रस सर्वश्रेष्ठ औषधि है। गाय का बच्चा जन्म लेते ही जो पहला गोबर करता है उससे रक्त कैंसर की सर्वश्रेष्ठ औषधि बनती है। कैंसर के रोगियों की पंचगव्य चिकित्सा के बारे में आपको अधिक जानकारी बलसाड़ (गुजरात) के कैंसर हॉस्पिटल से मिल सकती है।

गोबर त्वचा को जबरदस्त पोषण देता है। चेहरे पर लगाने से चेहरे पर चमक आ जाती है। चर्म रोगों के लिए यह रामबाण है। यह पसीने को नियंत्रित करता है। पसीने की दुर्गंध को मिटाता है। शारीरिक थकान होने पर शरीर पर और बौद्धिक थकान होने पर ललाटपर २० मिनिट इसका लेप लगाने से सारी थकान गायब हो जाती है। शहर के लोग गोबर से बने उबटन से लाभ उठा सकते हैं। इससे स्नान करने के बाद इतनी ताजगी आती हैं कि लोग अनायास ही कह पड़ते हैं- लगता है जीवन में पहली बार स्नान किया है।

भारत में पहले गोबर के कोयले से मंजन करने की परंपरा थी। इसमें आदमी बूढ़ा होने पर भी दाँत बूढ़े नहीं होते थे। जिन्हें दाँतों में दर्द होता है, उन्हें पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि इसके प्रयोग से केवल तीन दिन में दर्द गायब हो जायेगा। मेरा अपना अनुभव है- मेरे मुँह में सामने का एक दाँत हिलने लग गया था, मैंने टूथपेस्ट छोड़ इस मंजन का प्रयोग शुरु किया और एक महीने बाद इन्हीं दाँतों से गन्ना छिल-छिलकर खाया है।

गोबर की खाद के प्रयोग के अभाव में हमारा अन्न कितना जहरीला हो गया है, यह किसी से छिपा नही हैं। प्राण विज्ञान को जाननेवाले इस बात को जानते हैं कि अन्न और मन का क्या संबम्ध है। सामान्य जन में भी कहावत प्रचलित है- जैसा अन्न वैसा मन; आज जहरीला अन्न खाने से मन भी जहरीला हो गया है। समाज की तमाम समस्याओं का मूल यह जहरीला मन ही है।

आप सब वैज्ञानिकों से अनुरोध है कि गाय पर विशेष अध्ययन करें और यदि आप इसकी महत्ता प्रचार करेंगे तो देश के युवाओं को एक दिशा मिलेगी। इसलिए पहले आप स्वयं गाय के पंचगव्य से बने उत्पादों का प्रयोग करें। आपके सम्मुख जो बातें रखी गई है, उनमें कमियाँ तो बहुत हो सकती है लेकिन १ प्रतिशत भी बात बढ़ा-चढ़ा कर नहीं कही गयी है इसका आपको स्वयं ही अनुभव हो जायेगा। मेरा तो मात्र इतना ही कहना है कि मनुष्य को बचाना है तो गायों को बचाना ही होगा। आप इस संबंध में अधिक जानकारी चाहते हैं तो दो पुस्तकें 'गो-सुषमा' और 'अपने डॉक्टर स्वयं बनें' का अध्ययन करें।

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्द वन पथमेड़ा में गोमाता के आशीर्वाद से एवं संतों के शुद्ध संकल्प से विश्व की सबसे बड़ी गोशाला चल रही है, आप वहाँ रहकर और अधिक व्यावहारिक अध्ययन कर सकते हैं। राजस्थान में पड़ने वाले भंयकर अकालों में इस गोशाला को लाखों गोमाताओं की सेवा-सुश्रुषा का अवसर मिला है। वर्तमान में भी इस गोशाला की विभिन्न शाखाओं में लगभग 2 लाख 20 हजार गायें है। इतना होने पर भी स्वामीजी का स्पष्ट मत है कि गोशाला से गाये बच नहीं सकती। गायों को तो तभी बचाया जा सकता है जब गाय का वैज्ञानिक महत्त्व जनसामान्य को पता चलेगा और वे दैनिक जीवन में इसका प्रयोग करेंगे। यह महत्त्वपूर्ण कार्य संतों के साथ वैज्ञानिकों के संगम होने पर ही हो सकता है। मैं स्वामीजी की ओर से आप सभी को गोशाला पधारने के लिए आमंत्रित करता हूँ।

जनवरी, 2011 में गोऋषि श्रद्धेय स्वामी श्रीदत्तशरणानंदजी महाराज के प्रवास की संक्षिप्त रिपोर्टः-

चैन्नई ''श्रीधेनुमानस गोकथा'' सम्पन्न।

1 से 8 जनवरी तक गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा में ही विराजे, इस दौरान गोभक्त नर-नारी एवं बच्चे दर्शनार्थ लगातार पधारते रहे। इन्हीं दिनों में बंनासकाठा (गुज.) में गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज गोसेवार्थ आयोजनों व कार्यक्रमों में पधारे। श्रीराजाराम गोशालाश्रम, टेटोड़ा सहित आस-पास के समस्त गांवों के दुग्ध संकलन समितियों के कार्यकर्त्ताओं-प्रभारियों की सभा को आशीर्वचन व मार्गदर्शन प्रदान करने पधारे।

9 जनवरी को श्रीस्वामीजी महाराज ने पाटन में चल रही श्रीछोगारामजी गहलोत '' भक्तजी'' द्वारा हो रही ''गोकथा'' में आशीर्वचन प्रदान किया। 10 जनवरी, 2011 को प्रातः अहमदाबाद से चैन्नई के लिये प्रस्थान किया। चैन्नई हवाई अड्डे पर प.पू.स्वामी श्रीज्ञानानन्दजी महाराज, पू.ब्रह्मचारी श्रीदीनदयालजी महाराज के नेतृत्व में सैंकड़ों गोभक्त-गोसेवकों ने परम भागवत गोऋषि श्रद्धेय स्वामी श्रीदत्तशरणानंदजी महाराज का अभिनन्दन किया। उसी दिन सांयकाल वहाँ वरिष्ठ गोसेवक-गोभक्त कार्यकर्त्ताओं की चैन्नई में आयोजित गोकथा की अन्तिम तैयारियों को लेकर बैठक हुई।

11 जनवरी को आपश्री ने 'श्रीधेनुमानस गोकथा' की व्यवस्थाओं का कथास्थल एवं संतनिवास आदि पर जाकर अवलोकन कर आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया।

12 जनवरी को गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज की पावन निश्रा में ''धेनुमानस गोकथा'' कार्यक्रम का प.पू.संतवृंदों द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर परम पूज्य जगतगुरू शंकराचार्य श्रीजयेन्द्र सरस्वतीजी महाराज, ब्रह्मधाम आसोतरा के पीठाधीश्वर जगतगुरु ब्रह्माचार्य श्रीतुलछारामजी महाराज, जीनों के प्रधान संस्थापक परम पूज्य जैनमुनि श्रीपद्मसागरजी महाराज, प.पू. योगीराज श्रीसूरजनाथजी महाराज, प.पू. श्रीबालव्यास श्रीराधाकृष्णजी महाराज- जोधपुर, प.पू. श्रीज्ञानानंदजी महाराज, प.पू. श्रीरघुनाथभारतीजी महाराज, पू.ब्रह्मचारी श्रीगोविन्दवल्लभजी महाराज , पू.ब्रह्मचारी श्री दीनदयालजी महाराज, पू.ब्रह्मचारी श्रीअशोकजी महाराज आदि संतवृंदों की पावन उपस्थिति रही। इस अवसर पर अनेक राजनेतागण, धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधीगण, वरिष्ठ सरकारी अधिकारी भी पधारे।

पंचदिवसीय आयोजन में हजारों गोभक्त-गोसेवक, नर-नारी एवं बच्चों ने गोकथा व्यास प.पू. श्रीगोपाल 'मणिजी' महाराज की अमृतवाणी से गोमाता की महिमा और गोमाता की महत्ता, उपादेयता एवं आवश्यकता को सुना और समझा। परम भागवत गोऋषि श्रद्धेय स्वामी श्रीदत्तशरणानंदजी महाराज एवं अन्य संतवृन्दों का लगातार सानिध्य एवं दर्शनलाभ से भक्त-भाविक स्वयं को धन्य-धन्य अनुभूत कर रहे थे।

गोकथा के साथ-साथ दो दिन तक परम पूज्य बालव्यास श्रीराधाकृष्णजी महाराज द्वारा **''नरसीजी की हुंडी''** का भी आयोजन हुआ, जिसमें हजारो जनमानस ने भक्ति रस का आनन्द लिया, साथ ही प.पू.योगीराज महन्त श्रीसूरजनाथजी महाराज द्वारा प्रतिदिन प्रातः **''योग शिविर''**में गोभक्तों-गोसेवकों को योग के माध्यम से शरीर को स्वस्थ रखने के गुर सिखाए गए।

''धेनुमानस गोकथा'' का मंच संचालन गोभक्त श्रीओमआचार्यजी ने किया। कार्यक्रम के पाँचों दिन गोभामाशाहों का कथाव्यास श्रीगोपाल ''मणि''जी के द्वारा व्यासपीठ से सम्मान और गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने सभी को आशीर्वाद प्रदान किया गया। चैन्नई आयोजन के दौरान गोभक्तों से निराश्रित-अनाश्रित गोवंश की गोसेवार्थ

लगभग 300 ट्रक चारा का सहयोग प्राप्त हुआ।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के सान्निध्य में 16 जनवरी 2011 को ''श्रीधेनुमनस गोकथा'' का समापन हुआ। इस अवसर पर गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने अपने प्रवचन में तमिलनाडु के राजस्थानी प्रवासियों को गोसेवा के महात्म्य और गोमाता के गव्यों की महत्ता, उपादेयता, आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए अनवरत गोसेवा में लगे रहने की प्रेरणा दी।

17 जनवरी, 2011 को गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने तमिलनाडु प्रदेश की कई गोशालाओं का निरीक्षण किया और गोसेवा, गोरक्षा में लगे दक्षिण भारत के गोभक्तों को मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्रदान किया।

18 जनवरी, 2011 को गोभक्तों के साथ पुनः अहमदाबाद होते हुए सड़क मार्ग से मार्ग में आने वाली कई गोशालाओं का अवलोकन एवं दर्शन करते हुए सांयकाल गोधाम महातीर्थ आनन्दवन पथमेड़ा पधारे।

19 जनवरी, 2011 को गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज गोधाम में ही विराजे, मध्यान्ह को गोध ाम परिसर में सेवा प्रकल्पों के सभी ग्वालों-गोसेवकों की बैठक में गोशाला की व्यवस्था के सम्बन्ध में मार्गदर्शन व आशीर्वचन प्रदान किया। श्रीस्वामीजी महाराज ने कहा कि आप सभी को दोहरा लाभ हो रहा है। एक तो आपको आजीविका के लिए वेतन मिलता है और एक तरफ गोमाता की सेवा का पुण्य भी मिल रहा है। इसलिए सभी ग्वाले गायों के चरने की गमाणें, पानी पीने की होदीएँ एवं गोसेवा में काम आने वाली सभी प्रकार की वस्तुओं को गोमाता की वस्तु समझकर उसकी अच्छी प्रकार से सार-संभाल एवं उसका सदुपयोग करें। गोमाताओं को चारा डालते समय चारा गमाण से बाहर न गिरे, इसके लिए पूरी सावधानी रखें, परिसर की साफ-सफाई बनाये रखें।

इस अवसरपर गोधाम पथमेड़ा के महा-प्रबन्धक श्रीजानकीप्रसादजी गुप्ता और गोधाम के संस्थापक कार्यकर्त्ता श्रीबिजलारामजी चौधरी द्वारा भी व्यवस्था के सम्बन्ध में प्रकाश डाला गया।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महराज 20 जनवरी , 2011 को पुराड़ा गांव में आयोजित श्रीमहाकालेश्वर मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारे। वहाँ से श्रीस्वामीजी महाराज श्रीमनोरमा गोलोक महातीर्थ, नंदगाव पधारकर रात्रि विश्राम किया।

21 जनवरी 2011 को प्रातः गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने नंदगाँव परिसर का निरीक्षण करते हुए शिवालय हेतु जगह निश्चित की। इसी दिन सांयकाल को आपश्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन पथमेड़ा पधार गये।

23 जनवरी को गोधाम पथमेड़ा द्वारा संचालित श्री महावीर हनुमान गोशालाश्रम, गोलासन परिसर की गोमाता और नंदियों की व्यवस्थाओं के अवलोकनार्थ पधारे तथा चारा-पानी इत्यादि सभी प्रकार की व्यवस्थाओं व सेवा में संलग्न व्यवस्थापकों एवं गवालों को आवश्यक निर्देश प्रदान किये।

29 जनवरी को गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज का गुजरात में सूरत के लिए प्रस्थान करने का कार्यक्रम है। वहाँ 30 जनवरी को वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं की श्रीस्वामीजी महाराज की पावन निश्रा में एक बैठक रखी गई है। इस बैठक में सूरत में 13 से 17 मार्च,2011 को आयोजित होने वाले कार्यक्रम **''नानी बाई का मायरा''** के सम्बन्ध में तैयारियों आदि के स्वरूप पर विचार-विमर्श होगा।

जगद्गुरु द्वाराचार्य श्रीमंहत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज एवं संतों-साधकों का ''गोदुग्ध कल्प'' सम्पूर्णता की ओर।

श्रीगोधाम पथमेड़ा में जगद्गुरु द्वाराचार्य प.पू.श्रीमंहत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज सहित उनके सानिध्य में अनेक संत-साधकों का 25 दिनों से चल रहा **''गोदुग्ध कल्प''** अनुष्ठान सम्पूर्णता की और बढ़ रहा है, जो फरवरी के दूसरे सप्ताह में सम्पन्न होगा। गोदुग्ध कल्प के साथ-२ गोसेवा, गोपरिक्रमा और सत्संग लगातार हो रही है और सभी संतों को कई चमत्कारिक अनुभूतियाँ हो रही है।

''गोदुग्ध कल्प'' के अनुभव तथा महत्व पर कामधेनु कल्याण के अगले अंक में विशेष जानकारियाँ विस्तार से प्रकाशित की जायेगी।

व्रत-पर्वोत्सव
माघमास- माहात्म्य

साभार :– व्रतपर्वोत्सव–अंक

भारतीय संवत्सर का ग्यारहवाँ चान्द्रमास और दसवाँ सौरमास 'माघ' कहलाता है। इस महीनोमें मघा नक्षत्रयुक्त पूर्णिमा होने से इसका नाम माघ पड़ा। धार्मिक दृष्टिकोण से इस मासका बहुत अधिक महत्त्व है। इस मासमें शीतल जलके भीतर डुबकी लगानेवाले मनुष्य पापमुक्त हो स्वर्गलोकमें जाते हैं।

इस मासमें स्नान,दान उपवास और भगवान माधवकी पूजा अत्यन्त फलदायी है। इस विषयमें महाभारतके अनुशासनपर्वमें इस प्रकार वर्णन प्राप्त है कि हे भरतश्रेष्ठ! माघमासकी अमावास्याको प्रयागराजमें तीन करोड़ दस हजार अन्य तीर्थों का समागम होता है। जो नियमपूर्वक उत्तम व्रतका पालन करते हुए माघमासमें प्रयागमें स्नान करता है, वह सब पापोंसे मुक्त होकर स्वर्गमें जाता है।

जो माघमासमें ब्राह्मणोंको तिल दान करता है, वह समस्त जन्तुओंसे भरे हुए नरक का दर्शन नहीं करता। जो माघमासको नियमपूर्वक एक समय के भोजन से व्यतीत करता है, वह धनवान कुलमें जन्म लेकर अपने कुटुम्बीजनोंमें महत्त्वको प्राप्त होता है।

माघमासकी ऐसी विशेषता है कि इसमें जहाँ–कहीं भी जल हो, वह गंगाजलके समान होता है, फिर भी प्रयाग,काशी,नैमिषारण्य,कुरूक्षैत्र, हरिद्वार तथा अन्य पवित्र तीर्थों और नदियोंमें स्नानका बड़ा महत्त्व है। पद्मपुराणमें एक बड़ी रोचक कथा आयी है, जो इस प्रकार है––

प्राचीन कालमें नर्मदाके तटपर सुव्रत नामक एक ब्राह्मणदेवता निवास करते थे। वे समस्त वेद–वेदांगो, धर्मशास्त्रों एवं पुराणोंके ज्ञाता थे। साथ ही उन्होंने तर्कशास्त्र, ज्योतिष, गजविद्या,अश्वविद्या, मन्त्रशास्त्र, सांख्यशास्त्र, योगशास्त्र और चौंसठ कलाओंका भी अध्ययन किया था। वे अनेक देशोंकी भाषाएँ और लिपियाँ भी जानते थे। इतने विज्ञ होते हुए भी सुव्रतने अपने ज्ञानका प्रयोग धर्मकार्योंमें नहीं किया, अपितु आजीवन धन कमानेके लोभमें ही फँसे रहे। इसके लिये उन्होंने चाण्डालसे भी दान लेनेमें संकोच नहीं किया, इस प्रकार उन्होंने एक लाख स्वर्णमुद्राएँ अर्जित कर लीं। धनोपार्जनमें लगे–लगे ही उन्हें वृद्धावस्थाने आ घेरा, सारा शरीर र्जजर हो गया। कालके प्रभावसे सारी इन्द्रियाँ शिथिल हो गयी और वे कहीं आने–जानेमें असमर्थ हो गये। सहसा उनके मनमें विवेक उदय हुआ कि मैनें सारा जीवन धन कमानेंमें नष्ट कर दिया, अपना परलोक सुधारनेकी ओर कभी ध्यान ही नहीं दिया। अब मेरा उद्धार कैसे हो? मैंने तो आजीवन कोई सत्कर्म किया ही नहीं।

सुव्रत इस प्रकार पश्चात्तापकी अग्निमें दग्ध हो रहे थे, उधर रात्रिमें चोरोंने उनका सारा धन चोरी कर लिया। सुव्रतको पश्चात्ताप तो था ही, धनके चोरी चले जानेपर उनको ईश्वरताका भी बोध हो गया। अब उन्हें चिन्ता थी तो केवल अपने परलोककी। व्याकुलचित हो वे अपने उद्धारका उपाय सोच रहे थे कि तभी उन्हें उन्हें माघमास के महात्म्य की स्मृति आई। उन्होंने माघ–स्नानका संकल्प लिया और चल दिये नर्मदा के जल मे स्नान करने। इस प्रकार वे नौ दिनोंतक प्रातः नर्मदाके जलमें स्नान करते रहे। दसवें दिन स्नान बाद वे अशक्त हो गये, शीतसे पीडित हो उन्होंने प्राण त्याग दिया। यद्यपि उन्होंने जीवनभर कोई सत्कर्म नहीं किया था, पापपूर्वक ही धनार्जन किया था, परंतु माघमासमें स्नान करके पश्चात्तापपूर्वक निर्मल मन हो प्राण त्यागने से उनके लिये दिव्य विमान आया और उसपर आरूढ़ हो वे स्वर्गलोक चले गये। इस प्रकार माघ–स्नानकी अपूर्व महिमा हैं ।

इस मासकी प्रत्येक तिथि पर्व है। कदाचित् अशक्तावस्थामें पूरे मासका नियम न ले सके तो शास्त्रोंने यह भी व्यवस्था दी है कि तीन दिन अथवा एक दिन अवश्य माघ–स्नान व्रतका पालन करें।

गोशाला

साभारः गोशाला

(पंचखण्ड पीठाधीश्वर प. पू. आचार्य श्री धर्मेन्द्रजी महाराज)

(167)

दीपावली को मद्यप के घर
सजी न दीपों की माला,
जला न चूल्हा एवं भूखा
पड़ा रहा पीने वाला,
नित्य विविध व्यंजन बनते हैं-
गोभक्तों के गेहों में,
मधुशालाएँ दीवाली गोशाला.

(168)

रूखी रोटी, वह भी आधे -
पेट खिलाती मधुशाला,
सदा जलाती है मद्यप को
अहो ! क्षुधा की विष-ज्वाला,
आकर देखो गोशाला के,
गोभक्तों के, वैभव को,
उत्सव क्या? बारह महिनों नित, मोद मनाती
गोशाला.

(163)

लहराएँ अंगूर लताएँ
पर न बने उनसे हाला.
बने, बिकें मिट्टी के प्याले
पर न ढ़ले उनमे हाला.
जगे न ऐसी प्यास भड़क कर-
जो सुख शांति मिटा डाले.
बढ़े चौगुने पीने वाले.खुलें सौगुनी
गोशाला.

(170)

समझो कुशल न मधुपायी की
सकुशल हो यदि मधुशाला.
नहीं किसी के सुख में हर्षित
रह सकती साकी बाला.
मधुपायी की कुशल तभी जब
मधुशाला पर ताला हो,
और खुली हो उसके घर में कुशलकारिणी
गोशाला.

(171)

मधुबाला के यौवन का भी
है रहस्य पय का प्याला,
दीवाने मधुपायी को भी
पाला चुकी है गोशाला.
सुर, नर, मुनी, पशु, मानव, दानव
पय पीकर जी पाये हैं,
विविध रूप में सबके भीतर, छिपी हुई है
गोशाला.

(172)

सूर्य नहीं मधु का विक्रेता
सिन्धु न घट, नीर न हाला
अभ्र न साकी बने धरा भी
बनी न मदिरा का प्याला.
कामधेनु-स्तन सिन्धु, गोप-रवि
कलश-अभ्र, शिशु-धरा बनी,
बेलि,विटप,तृण बन जब पीता,पय बरसाती
गोशाला.

मासिक पत्रिका ''कामधेनु-कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक स्वामी ज्ञानानन्द द्वारा सुभद्रा प्रिंटिंग प्रेस, विश्नोई धर्मशाला के पास, साँचौर (जालोर) से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, पोस्ट-हाड़ेतर, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) से प्रकाशित।